क्रांतितीर्थ
स्वाधीनता संग्राम का
विहंगावलोकन

क्रांतितीर्थ

स्वाधीनता संग्राम का विहंगावलोकन

सेंटर फॉर एडवांडस्ट रिसर्च ऑन डेवलपमेंट एंड चेंज

क्रांतितीर्थ : स्वाधीनता संग्राम का विहंगावलोकन

प्रथम संस्करण : जुलाई 2023

निःशुल्क वितरण हेतु

© सर्वाधिकार प्रकाशाधीन

मुद्रण – एस एंड एस मार्केटिंग
बी – 26, पटपड़गंज इण्डस्ट्रियल एरिया
नयी दिल्ली – 110092

संकलन एवं प्रकाशन

सेंटर फॉर एडवांडस्ट रिसर्च ऑन डेवलपमेंट एंड चेंज
192, विद्या विहार, वेस्ट एन्क्लेव, पीतमपुरा, नई दिल्ली - 110034
ईमेलः mailcardc@gmail.com, वेबसाइटः www.cardc.co.in

वे स्थान, जहाँ भारत की भूमि और संस्कृति की रक्षा के संकल्प लिये गये, जहाँ बलिदान की अनुपम गाथाएं रची गयीं, जहाँ रणबाँकुरों ने अदभुत् शौर्य और पराक्रम का प्रदर्शन किया, जहाँ क्रांतिकारियों ने अपने लहू से धरती को सींचा ताकि यह और अधिक शूरवीरों को जन्म दे, जहाँ अंधेरे बंदीगृहों में स्वतंत्रता सेनानी आने वाली पीढ़ियों के लिये उजाले के सपने बुनते रहे, जहाँ भारत के जीवन को रंगों में उकेरा गया, जहाँ चारणों ने स्वतंत्रता के गीत गाये, जहाँ कलम से स्वतंत्रता के अग्निमंत्र लिखे गये, वे आंगन जिसमें खेले बालकों ने अपने तरुणाई के सपनों को भारत की स्वतंत्रता के लिये न्यौछावर कर दिया, तीर्थ बन गये

स्वतंत्र भारत के क्रांतितीर्थ

स्वांतत्र्य समर के उन ज्ञात, अज्ञात, अल्पज्ञात नायक-नायिकाओं की स्मृति में समर्पित है आजादी के अमृत महोत्सव के अवसर पर आयोजनों की यह शृंखला

क्रांतितीर्थ

अध्याय सूची

क्रम संख्या	अध्याय	पृष्ठ संख्या
1.	औपनिवेशिक यूरोपीय शक्तियों का प्रवेश	05
2.	भारतीय प्रतिरोध की निरंतरता	13
3.	दमनकारी नीतियां और उनका प्रतिकार	18
4.	क्रांति का श्रीगणेश	24
5.	क्रांतिकारी, संस्थाएं और आंदोलन	32
6.	स्वाधीनता से स्वतंत्रता की ओर	49

अध्याय- 1

औपनिवेशिक यूरोपीय शक्तियों का प्रवेश

- भारत का स्वतंत्रता संग्राम विश्व का अनूठा आन्दोलन है जो यूरोपीय औपनिवेशिक शक्तियों के विरुद्ध लगभग पांच शताब्दियों तक लड़ा गया।
- पंद्रहवीं शताब्दी में यूरोप अंधकार युग से बाहर आने की कोशिश में था। ईसाइयत के बंधनों में जकड़े यूरोप में कैथोलिक मान्यता वाले स्पेन और पुर्तगाल शक्ति के केन्द्र थे।
- यह पोप अलेक्जेंडर षष्ठ का कार्यकाल था जो स्पेन में जन्मे थे। यह संयोग ही था कि भारत की खोज में निकला स्पेन निवासी कोलम्बस अमेरिका जा पहुंचा।
- स्पेन को जहां संसाधनों से भरपूर नयी धरती पर कब्जा करने का अवसर मिला वहीं यह चिन्ता भी हुई कि प्रतिद्वन्दी राज्य पुर्तगाल भी अमेरिका में अपना आधार बनाने की कोशिश करेगा।
- पोप षष्ठ ने दोनों देशों के परस्पर संघर्ष को रोकने के लिये उनकी कल्पना के विश्व मानचित्र पर एक रेखा खींच कर पृथ्वी को दो भागों में बांट दिया और उस रेखा से पश्चिम का विश्व स्पेन को तथा पूर्व का विश्व पुर्तगाल के हवाले कर दिया।
- अब दोनों देशों को अपनी-अपनी दिशा में आगे बढ़ते हुए अपने व्यापार और मजहब का विस्तार करना था।
- दिसम्बर 1600 में महारानी एलिजाबेथ ने अपने राष्ट्र की प्रतिष्ठा और अपने लोगों के धन-वैभव के विचार से ईस्ट इंडिया कम्पनी को शासपत्र दिया। शासपत्र (चार्टर) द्वारा कम्पनी को पन्द्रह वर्ष की अवधि के लिये सम्पत्ति रखने, अपने सदस्यों तथा कर्मचारियों में अनुशासन बनाये रखने और व्यापार का अनन्य विशेषाधिकार दे दिया।
- पुर्तगाल, फ्रांस, डच और ब्रिटेन ने भारत में व्यापार के लिये कम्पनियों का गठन किया। यह उल्लेखनीय है कि सभी ने अपनी कम्पनियों का नाम ईस्ट इंडिया अथवा ऑरियण्टल इंडिया कम्पनी रखा।
- यह तथ्य इस विचार को गलत सिद्ध करता है कि अंग्रेजों के आने के कारण भारत एक देश बना।
- सभी कम्पनियों को सम्बंधित देशों के राजाओं द्वारा शासपत्र (चार्टर) प्रदान किये गये। इसके अंतर्गत अफ्रीका के केप ऑफ गुड होप से पूर्व के सारे एशियाई क्षेत्र से होने वाले व्यापार का उनके अपने देश में उक्त कम्पनियों को एकाधिकार दिया गया।

पुर्तगाली

- यूरोप में रोमन काल के समय से ही भारत अपनी संपदा के लिए प्रसिद्ध था। पन्द्रहवीं शताब्दी में भारत और यूरोप के बीच भूमध्य सागर के मार्ग से वेनिस द्वारा व्यापार किया जाता था।
- इस व्यापार पर वेनिस की एकछत्रता को समाप्त करने के लिए पुर्तगालियों ने सक्रिय रूप से भारत तक पहुंचने के वैकल्पिक मार्ग की तलाश प्रारंभ की।

- 1498 में भारत की खोज में चला पुर्तगाली नागरिक वास्को डी गामा अफ्रीका से एक भारतीय व्यापारी के जहाज का अनुसरण करते हुए केरल के कालीकट बंदरगाह पर आ पहुंचा।
- 1502 में वास्को डी गामा पुनः भारत आया। मार्ग में उसने बड़ी संख्या में भारतीय व अरब जहाजों को नष्ट किया।
- 1524 में वह अंतिम बार भारत आया। कोच्चि में मच्छर के काटने से उसे मलेरिया हुआ और 24 दिसम्बर 1524 को वह मर गया।
- भारतीय समुद्री तटों पर धीरे-धीरे पुर्तगालियों का नियंत्रण बढ़ता गया। लेकिन इसके लिये उन्हें लम्बे प्रतिरोध का सामना करना पड़ा।
- कोचीन, केम्बे, कन्नूर, दमन, दीव, वसई, सूरत, भावनगर, क्विलोन, क्रेगानोर, मंगलूर, हनावर आदि में उन्होंने अपनी फैक्ट्री स्थापित की।
- राजा मानविक्रम, उल्लाल की रानी अब्बक्का, चेन्नभैरवी और शिवमोगा के शिवप्पा नायक आदि ने पुर्तगालियों के समक्ष कठिन चुनौती प्रस्तुत की।
- पुर्तगालियों के विरुद्ध छत्रपति शिवाजी ने मराठा नौसेना को सशक्त किया तथा उनके विरुद्ध नौसैनिक युद्ध में अपनी सेना का नेतृत्व कर उन्हें पराजित किया।
- 1581 में पुर्तगाल का स्पेन में विलय हो जाने के कारण भारतीय उपमहाद्वीप में उसकी शक्ति क्षीण होने लगी। डचों तथा ब्रिटिश सेना के बढ़ते प्रभाव के चलते पुर्तगाली शासन केवल गोवा, दमन और दीव तक सीमित रह गया।
- 1947 में भारत की स्वतंत्रता के समय पुर्तगाल ने अपने नियंत्रण के क्षेत्र को भारत को सौंपने से इनकार कर दिया।

रानी अब्बक्का

रानी अब्बक्का कर्नाटक के उल्लाल में भारी मात्रा में काली मिर्च के व्यापार को नियंत्रित कर रही थी। पुर्तगालियों को उसकी ताकत और प्रतिरोध से हमेशा खतरा बना रहता। 1556 में पुर्तगालियों ने एडमिरल डॉन अल्वारो डी सिलवीरा के नेतृत्व में उल्लाल पर हमला किया, लेकिन वह बुरी तरह हार गया। दो साल बाद फिर से हमला किया और इस बार उल्लाल को कुछ नुकसान पहुंचाने में सफल रहा। रानी अब्बक्का ने कोस्टर्स और कोचीन के ज़मोरिन की मदद और उत्कृष्ट युद्ध तकनीकों एवं कूटनीतिक कौशल द्वारा पुर्तगालियों को कई बार हराने में सफल रही। पुर्तगालियों ने उसे विश्वासघात से हराने की योजना बनाई। उन्होंने उनके पति को उल्लाल में उसकी मदद न भेजने की चेतावनी दी। पुर्तगालियों ने भोर में एक अचानक हमले की योजना बनाई। रानी ने घोड़े पर सवार होकर अपनी सेना को "मातृभूमि को बचाओ; उन्हें जमीन और समुद्र पर हराओ; उनसे सड़कों और समुद्र तटों पर संग्राम करो । उन्हें पानी में वापस धकेल दो " ऐसे नारे हवाओं में गूंज उठे और सैनिक बहादुरी से लड़े।पुर्तगाली आर्मडा के कई जहाज उस रात जला दिए गए। रानी अब्बक्का गोलीबारी में घायल हो गयीं और उन्हें कुछ विश्वासघातियों की मदद से दुश्मन ने कैद कर लिया।

चिमाजी अप्पा

चिमाजी बालाजी भट, जिन्हें अक्सर अप्पा या भाऊ के नाम से जाना जाता था, बालाजी विश्वनाथ भट के पुत्र और मराठा साम्राज्य के बाजीराव पेशवा के छोटे भाई थे। उन्हें 'पंडित' की उपाधि दी गई थी। उनका जन्म 1707 में एक चितपावन परिवार में हुआ था। उन्होंने एक कुशल सेनापति की भांति भारत के पश्चिमी तट को पुर्तगाली प्रभुत्व से मुक्त कराने का जिम्मा उठाया। 1739 में एक संघर्ष के दौरान पुर्तगालियों से वसई किले को छुड़ाना उनके जीवन का चरमोत्कर्ष था। ऐसा सहस्राब्दियों में पहली बार हुआ था कि किसी एशियाई शक्ति ने किसी युद्ध में किसी यूरोपीय शक्ति को परास्त किया हो। परिणामस्वरूप, चिमाजी अप्पा की जीत को एक बड़ी जीत के रुप में सराहना मिली। चिमाजी ने ब्रह्मेंद्र को लिखे अपने पत्र में कहा, 'भगवान के सुदर्शन ने धार्मिक दुर्भावना रखने वाले चरमपंथियों को मजा चखाया और उन्हें मिट्टी में मिला दिया'। उन्हें मराठा साम्राज्य की रणनीति को नियंत्रित करने और बाजीराव की सभी लड़ाइयों की योजना बनाने के लिए जाना जाता था। 17 दिसंबर, 1740 को उनका निधन हुआ। वे पीछे छोड़ गए अपने बेटे सदाशिव राव भाऊ को, अठारहवीं शताब्दी के अगले दो दशकों के लिए अपने पिता के कर्तव्यों को पूरा करने के लिए।

- 15 अगस्त 1955 को बड़ी संख्या में भारतीयों ने गोवा में प्रवेश कर उसे मुक्त कराने का प्रयास किया।
- निहत्थे लोगों पर पुर्तगाल पुलिस ने गोली चला दी, जिसमें 30 लोगों का बलिदान हुआ।
- 1958 में वहाँ पर भारतीय रुपये का चलन बंद कर उसके स्थान पर एस्कुडो नामक मुद्रा प्रचलित की गयी।
- दिसम्बर 1961 में भारतीय सेना गोवा की ओर बढ़ी। सेना के इस अभियान को 'ऑपरेशन विजय' का नाम दिया गया।
- 8 व 9 दिसम्बर को वायुसेना ने पुर्तगाली अड्डों पर अचूक बमबारी की।
- 19 दिसम्बर 1961 को पुर्तगाली गवर्नर जनरल मैन्यू आंतोनियो सिल्वा ने समर्पण पत्र पर हस्ताक्षर किये और भारत में 451 वर्ष लंबे पुर्तगाली शासन का अंत हो गया।
- इसके बावजूद पुर्तगाल तानाशाह सालाजार ने इन क्षेत्रों पर भारतीय संप्रभुता को स्वीकार नहीं किया।
- 1974 में पुर्तगाल में हुई क्रांति में सालाजार का तख्ता पलट दिया गया। नयी बनी सरकार ने गोवा के भारत में विलय को स्वीकार करते हुए राजनयिक संबंध बहाल किये।

डच

- आपसी संघर्ष के चलते जहां धीरे-धीरे पुर्तगाल और स्पेन की शक्ति का क्षय होना शुरू हुआ वहीं डच और ब्रिटिश नयी प्रतिस्पर्धी शक्तियों के रूप में यूरोप में उभरने लगे।
- 1602 ई में डच यूनाइटेड ईस्ट इंडिया कम्पनी (वेरऐनिग्दे ऑव्स्टिडिस्खे कोम्पाग्नी (वीओसी) को भारत में व्यापार करने की अनुमति अपनी सरकार से प्राप्त हुई।

- 1605 में कारोमण्डल के मछलीपत्तनम बन्दरगाह पर उन्होंने पहली डच कोठी का निर्माण किया।
- मछलीपत्तनम के पश्चात उन्होंने दक्षिण भारत में निजामपत्तनम, देवनागपत्तनम, तथा तिरुपापलियुर में अपने व्यापारिक केन्द्र स्थापित किये।
- मुगलों से समझौते के बाद 1616 में वानब्रोइक ने गुजरात के सूरत बंदरगाह पर भी अपना केन्द्र बनाया।
- सूरत पर नियंत्रण करने के क्रम में उसे ब्रिटिश अधिकारी टॉमस रो के साथ भी संघर्ष करना पड़ा।
- धीर-धीरे उन्होंने बंगाल के पिप्पली, कालाशोर, चिंसुरा, कासिम बाजार और पटना में भी अपने व्यापारिक केन्द्र स्थापित कर लिये।
- इसके लिये उन्हें पुर्तगाली और ब्रिटिश के साथ संघर्ष तो करना ही पड़ा, स्थानीय तीव्र प्रतिरोध का भी सामना करना पड़ रहा था। मलाबार में हैदर अली और कर्नाटक के नवाब से भी इनका संघर्ष हुआ।
- 1680 के दशक से जैसे-जैसे एशिया के भीतर व्यापार में गिरावट आती चली गई, बंगाल हॉलैंड को निर्यात की जाने वाली वस्तुओं के प्रमुख केंद्र के रूप में उभरने लगा।
- दक्षिण में इनका विस्तार सभी स्थानीय शासकों को चुनौती देने लगा।
- 1730 के दशक में शक्तिशाली राजा मार्तंड वर्मा (1706 - 1758) के अधीन त्रावणकोर साम्राज्य के साथ इनका संघर्ष प्रारंभ हो गया।
- अंग्रेजों को दो बार पराजित कर चुकी इस प्रमुख शक्ति को 1741 में मार्तंड वर्मा द्वारा कोलाचल के युद्ध में परास्त कर दिया गया।

फ्रांसीसी

- फ्रांसीसी यात्री ट्रेवर्नियर के वर्णन से प्रभावित होकर फ्रांस के राजा लुई चौदहवें ने 1664 ई. में फ्रांसीसी कम्पनी को 30 लाख लीरा का सहयोग देकर पूर्वी देशों में व्यापार करने के लिये भेजा।
- फ्रांस पूर्वी भारत में व्यापारिक उद्देश्य से प्रवेश करने वाली अंतिम यूरोपीय समुद्री शक्ति था।

कोलाचल की लड़ाई और राजा मार्तंड वर्मा

छोटे दक्षिण भारतीय राज्य वायनाड के शासक राजा मार्तंड वर्मा ने डचों के साथ लोहा लिया। डच एक प्रमुख यूरोपीय शक्ति के रूप में 1740 के दशक की शुरुआत में भारत को उपनिवेश बनाने की कोशिश कर रहे थे। डच ईस्ट इंडिया कंपनी ने छोटे राज्यों को त्रावणकोर राज्य में एकीकृत करने की राजा की योजनाओं में हस्तक्षेप करने की कोशिश की। डच नौसैनिकों का जत्था जुलाई 1741 के अंत में कन्याकुमारी के पास एक तटीय शहर कोलाचल पर उतरा, और उत्तर में मार्तण्ड वर्मा की राजधानी पद्मनाभपुरम पर कब्जा करने का प्रयास किया। त्रावणकोर सेना - जिसे 'नायर पट्टलम ' कहा जाता था – 10 अगस्त 1741 को त्रिवेंद्रम से युद्ध स्थल पर पहुंची । मार्तण्ड वर्मा की सेना ने डचों को बुरी तरह से हराया, उन्हें बड़ी संख्या में मार डाला या गिरफ्तार कर लिया। उनके सेनापति डी लिनॉय ने आत्मसमर्पण कर दिया।

- लुई चौदहवें ने फ्रांसीसी व्यापारियों के सहयोग के लिये ईरान के शाह तथा मुगल बादशाह औरंगजेब को पत्र भी लिखा।
- औरंगजेब ने डचों और अंग्रेजों की भाँति ही फ्रांसीसियों को व्यापार करने की अनुमति देते हुए शाही फरमान जारी किया।
- भारत में पहला फ्रांसीसी कारखाना 1668 में सूरत में स्थापित किया गया।
- 1669 में फ्रांस ने एक बड़ा जहाजी बेड़ा अरब सागर में भेजा जिसके बल पर वे मलाबार तट पर अपनी कोठियाँ स्थापित करने में सफल हो गये।
- मछलीपत्तनम, कालीकट और माही पर अब उनका अधिकार हो गया।
- एक अन्य कारखाना 1674 में पांडिचेरी में स्थापित किया गया। यह भारत में फ्रांसीसियों का एक तरह से मुख्यालय हो गया था।
- फ्रांसीसी व्यापार की वास्तविक शुरुआत 1690 में चंदननगर के अधिग्रहण के साथ हुई।
- 1741 तक फ्रांसीसी अधिकांशतः स्थानीय राजनीति से दूर रहे, किंतु जोसेफ फ्रैंकॉएस डूप्ले के आगमन के साथ, उन्होंने भारतीय राज्यों के आन्तरिक संघर्ष में हस्तक्षेप कर अपने लिये अवसर प्राप्त करने के प्रयास किये।
- इस सबने अंग्रेजों के साथ संघर्ष को जन्म दिया, जो कि फ्रांसीसियों के प्रतिद्वंदी थे।
- प्रत्यक्ष युद्ध में फ्रांसीसी पराजित हुए तो उन्होंने भारतीय राज्यों को अंग्रेजों से लड़ने के लिए प्रोत्साहित किया। इस समय हैदराबाद और कर्नाटक में सत्ता का संघर्ष चल रहा था।
- डूप्ले ने हैदराबाद की गद्दी के लिये मुजफ्फरजंग और कर्नाटक की गद्दी के लिये चाँदा साहब का पक्ष लिया।
- हैदराबाद में डूप्ले को सफलता मिली जिसके बदले दक्खिन के सूबेदार बने मुजफ्फर जंग ने 1750 में डूप्ले को कृष्णा नदी और कन्याकुमारी के बीच के समस्त क्षेत्र का नवाब बना दिया।
- टीपू सुल्तान ने जब त्रावणकोर पर आक्रमण किया तो फ्रांसीसियों ने उसका साथ दिया। टीपू युद्ध में मारा गया और पांडिचेरी और चंदननगर को छोड़ सारा भू-भाग फ्रांसीसियों के हाथ से निकल गया।
- भारत की स्वतंत्रता के बाद 1954 में फ्रांस ने इन्हें भारत को लौटा दिया। 1955 में फ्रांस की संसद ने उक्त निर्णय की पुष्टि कर दी।

ब्रिटिश ईस्ट इंडिया कम्पनी

- मर्चेन्ट एडवेन्चर्स नामक 80 ब्रिटिश व्यापारियों के समूह ने एक कम्पनी की स्थापना की जिसकी अंशधारक स्वयं महारानी एलिजावेथ भी थी।
- उन्होंने 31 दिसम्बर 1600 को कम्पनी को पूर्वी देशों के साथ व्यापार का अधिकार प्रदान किया।
- 1608 में इंग्लैण्ड के राजा जेम्स प्रथम का पत्र लेकर कैप्टन हॉकिन्स मुगल सम्राट जहांगीर के दरबार में उपस्थित हुआ।
- जहांगीर की ओर से उसे एक जागीर भेंट की गयी और सूरत में व्यापारिक कोठी स्थापित करने की अनुमति भी मिली किन्तु पुर्तगालियों के दवाब में यह अनुमति निरस्त कर दी गयी।

पळशी राजा

पळशी राजा (1753-1805) उर्फ केरल वर्मा उनमें से एक हैं, जिन्हें अंग्रेजों के विरुद्ध अपने वीरतापूर्ण प्रतिरोध के बावजूद इतिहास में उचित स्थान नहीं मिल पाया। अपने गुरिल्ला युद्ध के लिए जाने जाने वाले पळशी राजा मालाबार के 18वीं शताब्दी के शासक आर्थर वेलेस्ली को हराने वाले एकमात्र व्यक्ति थे। उनका जन्म 1753 में कोट्टायम शाही परिवार में केरल वर्मा के रुप में हुआ था। उन्हें कन्नूर के पळशी गाँव, जहाँ उनका जन्म हुआ था, से पळशी राजा नाम मिला। 21 वर्ष की आयु से, पळशी ने हैदर अली और बाद में टीपू दोनों के साथ 1774 से 1793 तक युद्ध किया। उन्होंने 1796 में अंग्रेजों के विरुद्ध एक गहन लड़ाई लड़ी। पहले से ही गुरिल्ला युद्ध में पारंगत पळशी और उनके लोगों ने पथरीले स्थानों की मदद से अंग्रेजों को इस देश से निकाल फेंकने के लिए संघर्ष प्रारम्भ कर दिया। इसका परिणाम यह हुआ कि 1793 से 1797 के मध्य 1,000 ब्रिटिश सैनिकों और 3,000 ब्रिटिश-नियुक्त देशी सिपाहियों को पळशी राजा की सेना ने मार गिराया। राजा को युद्ध के मैदान में तो परास्त नहीं किया जा सका लेकिन सैन्य धूर्तता से 1805 में उन्हें मार डाला गया।

- 1615 में सर थामस रो मुगल दरबार में उपस्थित हुआ। एक दशक के अंदर ही उन्होंने सूरत, भरुच, अहमदाबाद, आगरा और मुसलीपत्तनम में व्यापारिक कोठियां स्थापित कर लीं।
- 1640 में अंग्रेजों ने मद्रास शहर को बसाया और वहां पर सेंट जार्जफोर्ट का निर्माण कराया।
- ब्रिटेन के शासक चार्ल्स द्वितीय के पुर्तगाली राजकुमारी कैथरीन के साथ विवाह में दहेज के रूप में उन्हें बम्बई प्राप्त हुआ।
- 1668 में बम्बई बन्दरगाह 10 पौण्ड वार्षिक के किराये पर ईस्ट इंडिया कम्पनी को दे दिया गया।
- 1688 में सूरत के गवर्नर सर जॉन चाइल्ड ने मक्का जा रहे जहाजों को लूट लिया जिससे क्रोधित औरंगजेब ने उनकी कोठियां छीन ली।
- अंग्रेजों को क्षमा प्रार्थना के अतिरिक्त 17,000 पौण्ड अर्थ दण्ड भी चुकाना पड़ा।

पुली थेवर : पूली थेवर हिंदू मारवा समुदाय के एक स्थानीय सरदार थे, जिन्हें अंग्रेजों द्वारा पोलीगर और स्थानीय भाषा में पलायकर के रूप में जाना जाता है। ब्रिटिश कंपनी की हड़प नीति दिन प्रतिदिन बढ़ती ही जा रही थी और इसी शृंखला में वे भारतीय प्रायद्वीप के दक्षिणी सिरे तक पहुंच चुके थे। पुली थेवर ने नवाब को पारंपरिक चावल भेंट देने से इनकार कर दिया। आरकोट के नवाब मोहम्मद अली अंग्रेजों के नजदीकी थे, उन्होंने 1736 में शासक के शक्तिहीन होने के पश्चात् मदुरै और दक्षिणी हिस्सों पर अपना अधिकार कर लिया था। पुली थेवर और पलायकरों ने आरकोट के नवाब के आधिपत्य को कभी स्वीकार नहीं किया, उन्होंने अपने लिए अलग सत्ता का निर्माण कर लिया। पुली थेवर सदैव अजेय रहे, उन्होंने थमिराबरानी के तट पर ब्रिटिश और नवाब सैनिकों की बटालियन को हराया। 1761 में उन्हें अंग्रेजों और नवाब की सेना द्वारा गिरफ्तार कर लिया गया और जेल ले जाया गया। रास्ते में वे बच निकले ।

- 1708 में दो प्रतिद्वंदी ब्रिटिश कम्पनियों के विलय से नयी कम्पनी का गठन हुआ जिसे नाम दिया गया दी यूनाइटेड कंपनी ऑफ़ मर्चेंट ऑफ़ इंग्लैंड ट्रेडिंग विथ दी ईस्ट इंडीज ।
- पतन की ओर बढ़े रहे मुगल साम्राज्य के बीमार बादशाह फर्रूखसियर को उचित चिकित्सा देकर कम्पनी के डॉक्टर ने स्वस्थ किया जिसके बदले में 1717 में ईस्ट इंडिया कम्पनी के सम्पूर्ण व्यापार को चुंगी व अन्य करों से माफी दी गयी। साथ ही उनके प्रभाव क्षेत्र कलकत्ता और मद्रास के निकट के कुछ गांव भी भेंटस्वरूप दिये गये।
- दक्खिन की सूबेदारी और कर्नाटक की नवाबी को लेकर अंग्रेजों ने हस्तक्षेप किया जिसमें उन्हें अपने लिये अनुकूलता बनाने में सफलता मिली। अब उनकी नजर बंगाल पर थी।
- 1756 में बंगाल के नवाब अलीवर्दी खां की मृत्यु के बाद सिराजुदौला नवाब बना।
- सिराजुद्दौला ने 15 जून 1756 को अंग्रेजों के किले फोर्ट विलियम को घेर लिया। 5 दिनों बाद अंग्रेजों ने समर्पण कर दिया।

प्लासी का युद्ध

प्लासी का युद्ध 23 जुलाई 1757 को प्लासी नामक स्थान पर सिराजुद्दौला और अंग्रेजों की सेना आमने-सामने थी। अंग्रेजों की सेना में तोपखाने के साथ तीन हजार सैनिक वहीं नवाब के साथ 50 हजार की विशाल सेना। नवाब की सेना का सेनापति मीर जाफर था जो पहले ही अंग्रेजों से मिल चुका था। नवाब की सेना के जिन सैनिकों को षड्यंत्र की जानकारी नहीं थी, वे लड़े और मारे गये। 25 जून को मुर्शिदाबाद पहुंचकर मीर जाफर ने स्वयं को नवाब घोषित कर दिया। सिराजुद्दौला को बंदी बनाकर उसकी हत्या कर दी गयी। ईस्ट इंडिया कम्पनी को 24 परगनों की जमीदारी प्राप्त हुई। 50 लाख रुपये का इनाम सैनिकों तथा नाविकों को बांटा गया। क्लाइव को व्यक्तिगत रूप से 2,34,000 पौण्ड भेंट किये गये। बंगाल की सभी फ्रांसीसी बस्तियां अंग्रेजों को सौंप दी गयीं। उनके व्यापार को कर मुक्त कर दिया गया। 1764 बक्सर में मीर कासिम ने अवध के नवाब शुजाउद्दौला और मुगल सम्राट शाह आलम के साथ मिलकर अंग्रेजों से मोर्चा लेने की योजना बनायी।

- 22 अक्तूबर 1764 को बक्सर (बिहार) के मैदान में आधुनिक अस्त्र-शस्त्रों से सज्जित अंग्रेजी सेना के सामने इन्हें हार का मुंह देखना पड़ा।
- बक्सर का युद्ध निर्णायक सिद्ध हुआ जिसके परिणाम स्वरूप वर्तमान बंगाल (बंगला देश सहित), उड़ीसा और बिहार पर अंग्रेजों का पूरा नियंत्रण हो गया। अवध के नवाब और दिल्ली के सम्राट को भी अंग्रेजों के आगे घुटने टेकने पड़े।
- 1765 से 1784 तक का ईस्ट इंडिया कम्पनी का शासन भ्रष्टाचार, धूर्तता, निकृष्टता और बुराई का पर्याय था। इतनी भ्रष्ट कम्पनी और बुरी सरकार दुनिया के किसी भी सभ्य देश में कभी नहीं रही। इस वक्तव्य की पुष्टि सर जॉर्ज कार्नवाल ने 1858 में हाउस ऑफ कॉमन्स में और कम्पनी के एक अधिकारी रिचर्ड बीचर

तिलका मांझी उर्फ जबरा पहाड़िया जिन्होंने राजमहल, झारखंड की पहाड़ियों पर ब्रिटिश सत्ता से जमकर लोहा लिया, का जन्म 11 फरवरी 1750 को सुल्तानगंज, बिहार के तिलकपुर नामक गांव में हुआ था। अंग्रेजों की शोषणकारी नीतियों के कारण वनवासी केवल खेतिहर मजदूर या अपनी जमीन पर 'किरायेदार' बनकर रह गए थे। 1770 के दशक के दौरान, तिलका ने भागलपुर में छोटी-छोटी सभाओं में लोगों को संगठित करना शुरु किया। उनसे कंपनी शासन का विरोध करने और जाति-जनजाति के विभाजन से ऊपर उठकर अपनी संपत्ति वापस लेने का आग्रह किया। 1778 में वनवासी 28 वर्षीय तिलका मांझी के नेतृत्व में एकजुट हुए और उन्होंने रामगढ़ छावनी में तैनात कंपनी की रेजिमेंट पर आक्रमण किया। अंग्रेजों को लगने लगा कि अब वनवासियों से लड़ना मुश्किल है, वे छावनी छोड़कर भाग गए। तिलका ने साहसिक निर्णय लिया और 1784 में वनवासियों के साथ मिलकर भागलपुर पर आक्रमण कर दिया। इस आक्रमण ने अंग्रेजों को पूरी तरह से आश्चर्यचकित कर दिया। यह ब्रिटिश शक्ति के लिए एक बड़ा झटका था। तिलका मांझी और उनके साथियों को अधिक नुकसान नहीं हुआ और वे जंगलों में वापस चले गए। अंग्रेजों ने पूर्ण रुप से तिलका और उनके साथियों के लिए आपूर्ति के सभी मार्गों को अवरुद्ध कर दिया। अंततः 12 जनवरी 1785 को उनको गिरफ्तार कर लिया गया और 13 जनवरी 1785 को अंग्रेजों द्वारा उन्हें फाँसी दे दी गई और उनके अल्प जीवन का अंत कर दिया गया। जब उनकी मृत्यु हुई तब वह केवल 35 वर्ष के थे।

ने बोर्ड ऑफ डायरेक्टर को भेजे अपने पत्र में की।

- 25 मई 1773 में ब्रिटिश संसद ने रेग्यूलेटिंग एक्ट पारित किया।
- एक ओर इसका उद्देश्य भारतीय प्रजा को यह संदेश देना था कि ब्रिटिश संसद उपनिवेश में न्यायपूर्ण शासन देना चाहती है वहीं दूसरी ओर कम्पनी अधिकारियों की मनमानी और भ्रष्टाचार पर भी लगाम लगाने की कोशिश थी।
- कम्पनी की शक्तियों को सीमित किया और डाइरेक्टर का कार्यकाल चार वर्ष निश्चित कर दिया गया।
- बंगाल के गवर्नर को भारत का गवर्नर घोषित कर दिया गया और उसकी सहायता के लिये चार सदस्यीय कौंसिल नियुक्त की गयी।
- कलकत्ता में सुप्रीम कोर्ट की स्थापना की गयी जिस पर गवर्नर जनरल का नियंत्रण नहीं था।
- वारेन हेस्टिंग्ज के पूरे कार्यकाल को अन्याय और अशोभनीय कृत्यों के लिये याद किया जाता है जिनमें बंगाल के राजा नन्द कुमार को फांसी, बनारस के राजा चेतसिंह से दुर्व्यवहार कर उनका राज्य छीनना और अवध की बेगमों से की गयी लूट में उसकी सहभागिता कुछ उदाहरण हैं।

❖ ❖ ❖

अध्याय- 2

भारतीय प्रतिरोध की निरंतरता

आंग्ल - मराठा युद्ध

- 1772 ई. में पेशवा माधवराव की मृत्यु हुई। इस समय तक पश्चिम व मध्य भारत के साथ ही दिल्ली से हैदराबाद तथा गुजरात से उड़ीसा तक मराठों का प्रभाव था।
- हेस्टिंग्ज द्वारा मराठों के साथ पुनः पुरन्दर की संधि की गयी किन्तु लंदन में बैठे कम्पनी के डायरेक्टर पुरन्दर की संधि को मानने तैयार नहीं हुए। परिणामस्वरूप युद्ध अवश्यंभावी हो गया।
- नाना फड़नवीस ने होलकर और सिंधिया के साथ मिलकर बड़गाँव नामक स्थान पर अंग्रेजों से मोर्चा लिया।
- अंग्रेजों को शर्मनाक पराजय का सामना करना पड़ा और 1773 के पश्चात मराठों से जीते सभी क्षेत्र वापस करने पड़े।
- 1782 में महाद जी सिंधिया की मध्यस्थता से दोनों पक्षों के बीच सालवाई की संधि के अनुसार सालसेट और एलीफैन्टा द्वीप अंग्रेजों के पास रहा। यमुना के पश्चिम के पूरे क्षेत्र पर सिंधिया का अधिकार और माधव नारायण को पेशवा स्वीकार किया गया।
- 1784 में आये पिट्स इंडिया एक्ट के द्वारा कम्पनी की सरकार पर ब्रिटिश संसद का कड़ा नियंत्रण हो गया। एक बोर्ड ऑफ कंट्रोल बनाया गया जिसके निर्देश के पालन के लिये कम्पनी का संचालन मण्डल बाध्य था। बिना इसकी अनुमति के गवर्नर जनरल तथा उसकी कौंसिल किसी भारतीय नरेश से युद्ध अथवा संधि नहीं कर सकते थे।

सदाशिव राव भाऊ का जन्म 4 अगस्त, 1730 को पुणे में हुआ था। उनके पिता चिमाजी अप्पा और चाचा बाजी राव प्रथम थे। भाऊ ने पारंपरिक मराठा रणनीति पर निर्भरता के स्थान पर पैदल सेना और तोपखाने की नई रणनीति अपनाई, जिसके बारे में उन्होंने महसूस किया कि यह उत्तर की तरह खुले मैदानी युद्ध में काम नहीं करेगा। भाऊ ने 1760 में सशस्त्र आक्रमण करके दिल्ली पर अपना अधिकार स्थापित कर लिया और दुर्रानी को वहां से खदेड़ दिया। कुंजीपुरा में यह अफगानों पर मराठों की बड़ी जीत थी, अब्दाली के कुछ सबसे अच्छे सेनापति भी मारे गए थे। 14 जनवरी, 1761 को मकर संक्रांति के दिन, पानीपत की तीसरी लड़ाई में, जब मराठों और अफगानों के बीच अब तक की सबसे निर्णायक लड़ाई हुई, भाऊ ने अफगानों के विरुद्ध संघर्ष किया लेकिन विश्वास राव की मृत्यु ने मराठों में निराशा उत्पन्न कर दी। सबसे महान मराठा नायकों में से एक, सदाशिवराव भाऊ, पानीपत के मैदान में आखिरी दम तक लड़ते हुए बलिदान हो गए।

- 1786 में लार्ड कार्नवालिस भारत का गवर्नर जनरल बनकर आया। उसने प्रशासन, न्याय और व्यापार व्यवस्था का पुनर्गठन किया।
- 1793 में उसने जमीदारों को भूमि का स्थायी स्वामित्व प्रदान कर दिया जिसके कारण ईस्ट इंडिया कंपनी के अंतर्गत एक नया जमींदार वर्ग विकसित हुआ।
- स्वतंत्रता के पश्चात 1955 में पूरी तरह इस जमींदार प्रथा को समाप्त किया गया।
- 1793 में कार्नवालिस के स्थान पर गवर्नर बनकर आये सर जॉन के पांच वर्ष के कार्यकाल में परिस्थिति सामान्य बनी रही किन्तु 1798 में बेहतर वेतन भत्तों की मांग करते हुए बंगाल में तैनात यूरोपीय सैनिकों ने विद्रोह कर दिया। ब्रिटेन ने उसे वापस बुलाकर उसके स्थान पर लार्ड वेलेजली को भेजा।
- लॉर्ड वेलेजली जब गवर्नर बनकर भारत आया तो उसकी आयु मात्र 37 वर्ष थी। उसने भारतीय रियासतों के साथ सहायक संधि की नीति अपनायी।
- इस नीति के अनुसार सहायक संधि स्वीकार करने वाले राज्य को कम्पनी का अधिपत्य स्वीकार करना पड़ता था। कहने को तो कम्पनी राज्य की सहायक बनती थी किन्तु वस्तुतः वह राज्य की मालिक ही हो जाती थी। राज्य को अपने राज्य में अंग्रेजी सेना रखनी पड़ती थी और उसका व्यय राज्य को उठाना पड़ता था। सेना का नियंत्रण अंग्रेज सेनानायक के हाथ में रहता था। आन्तरिक विद्रोह अथवा बाहरी आक्रमण की स्थिति में अंग्रेज उस राज्य की रक्षा का वचन देते थे। अंग्रेजों के प्रतिनिधि के रूप में राज दरबार में एक अंग्रेज रेजिडेंट की नियुक्ति की जाती थी जो अक्सर राजा को भी निर्देश देने की स्थिति में रहता था। अंग्रेजों की अनुमति के बिना न तो राजा किसी यूरोपीय को अपनी सेवा में ले सकता था और न ही वे किसी अन्य राज्य से संधि अथवा युद्ध कर सकते थे। किसी भी विवाद की स्थिति में अंग्रेज ही मध्यस्थ की भूमिका निभाने के लिये अधिकृत थे।
- धीरे-धीरे भरतपुर, बूंदी, जोधपुर, जयपुर, हैदराबाद, मैसूर, तंजोर, ग्वालियर, इन्दौर, नागपुर, अवध आदि सभी सहायक संधि में बंध गये। इसके कारण लगभग आधे भारत पर अंग्रेजों का प्रत्यक्ष या अप्रत्यक्ष राज्य स्थापित हो गया।
- 1807 में लॉर्ड मिण्टो गवर्नर बनकर आया जिसने सैनिक अभियान कर बुन्देलखण्ड में अजयगढ़ और कालिंजर के किले पर अधिकार कर लिया। ट्रावनकोर और कोचीन पर अधिकार कर उसने इन्हें कम्पनी के राज्य में मिलाया। अफगानिस्तान, पंजाब, सिन्ध और फारस के साथ सामरिक सहयोग संधि की तथा 1810 में मारीशस तथा अन्य छोटे द्वीप समूहों से फ्रांसीसीयों को खदेड़कर उस पर नियंत्रण स्थापित कर लिया।
- 1813 में ब्रिटिश पार्लियामेंट ने एक चार्टर जारी कर चाय को छोड़कर शेष सभी वस्तुओं के व्यापार से कम्पनी का एकाधिकार समाप्त कर दिया।
- 17 मई 1816 को हुई नागपुर संधि के अनुसार अंग्रेजों की 6 बटालियन सेना, एक घुड़सवार रेजिमेंट तथा तोपखाना नागपुर में रखा जाना था जिसके लिये वहां के भोसले शासक को 7.5 लाख रुपये वार्षिक कम्पनी को चुकाने थे।
- अगले ही वर्ष कर्नल स्मिथ ने पूना को घेर लिया और 13 जून 1817 को पेशवा ने आत्मसमर्पण कर दिया। पेशवा को संधि के लिये विवश होना पड़ा जिसके अनुसार मराठा मण्डल को ध्वस्त कर दिया गया।
- ब्रिटिश रेजीडेंट की भूमिका महत्वपूर्ण हो गयी। अहमदनगर का दुर्ग, बुन्देलखण्ड, मालवा और शेष भारत

के अधिकार कम्पनी को सौंपने पड़े।

- कुछ ही समय बाद हेस्टिंग्ज ने कानपुर को घेर लिया और 5 नवम्बर 1817 को सिंधिया को ऐसी ही अपमानजनक संधि पर हस्ताक्षर करने पड़े। इस प्रकार अंग्रेजों से अलग-अलग टकराकर सभी मराठा राज्यों को भारी कीमत चुकानी पड़ी।
- 18 जून 1818 को पेशवा को उनका राज्य ब्रिटिश साम्राज्य में मिलाकर कानपुर के पास बिठूर में निर्वासित कर दिया गया।
- कैम्पबेल की सेना ने 11 मई 1824 को रंगून पर अधिकार कर लिया।
- प्रोम पर अंग्रेज सेना का अधिकार होते ही बर्मा के राजा ने 24 फरवरी 1826 को यांडबू की संधि कर युद्ध विराम कर लिया। संधि के फलस्वरूप अंग्रेजों को अराकान तथा लेना सरीम का भू-भाग, असम, जयन्तिया तथा कछार के इलाकों पर कम्पनी का अधिकार हो गया। मणिपुर को स्वतंत्र राज्य घोषित कर दिया गया। युद्ध की क्षतिपूर्ति के रूप में अंग्रेजों को 10 लाख पौण्ड प्राप्त हुए तथा रंगून में अंग्रेज रेजीडेंट की नियुक्ति की गयी।
- 1824 में बैरकपुर छावनी के हिन्दुस्तानी सैनिकों को रंगून भेजा जाने लगा तो उन्होंने विद्रोह कर दिया। उनके दमन के लिये कलकत्ता से सेना बुलायी गयी जिसने इन विद्रोही सैनिकों को चारों ओर से घेरकर गोलीबारी की जिसमें अधिकांश सैनिक मारे गये। जो सैनिक बच गये उन्हें तोप के मुंह से बांधकर उड़ा दिया गया।

सिंध

- 1832 में बेंटिक ने कर्नल पोटिंगर को सिन्ध में भेजकर एक व्यापारिक संधि की जिसके अनुसार अंग्रेजी पर्यटकों के आवागमन तथा कम्पनी के व्यापारिक जहाजों के लिये सिन्धु नदी खुली रहेगी।
- 1833 में लॉर्ड विलियम बेंटिक ने सतलज के तट पर स्थित रोपड़ शहर में महाराजा रणजीत सिंह के साथ एक संधि की जिससे सतलज के मार्ग से व्यापार करने की अनुमति अंग्रेजों को प्राप्त हुई।
- 1834 में पूरक संधि द्वारा आयात-निर्यात की दरें सुनिश्चित की गयीं तथा कर्नल पोटिंगर को राजनैतिक ऐजेन्ट के रूप में सिन्ध में नियुक्त कर दिया।
- महाराजा रणजीत सिंह ने जब सिंध को विजय करने का इरादा बनाया तो गवर्नर जनरल ऑकलैण्ड ने सहयोग के बदले सहायक संधि स्वीकार करने का प्रस्ताव भेजा।
- सिन्ध के अमीरों द्वारा प्रस्ताव अस्वीकार करने पर अंग्रेजों ने रणजीत सिंह की सहायता करने तथा अमीरों का अस्तित्व समाप्त कर देने की धमकी दी। अंततः दबाव में उन्हें सहायक संधि स्वीकार करनी पड़ी।
- 1843 में सिंध को पूरी तरह कम्पनी में मिला लिया गया।

अफगानिस्तान

- अंग्रेजों ने 2 अक्तूबर 1838 को अफगानिस्तान के विरूद्ध युद्ध की घोषणा की।
- बोलन दर्रे को पार करते हुए 20 मार्च को क्वेटा और 25 मार्च 1838 को कन्धार पर अधिकार कर लिया।

- जुलाई में गजनी हाथ से निकलने के बाद वहाँ का शासक दोस्त मुहम्मद पलायन कर गया।
- कोई रास्ता न पाकर 2 नवम्बर 1840 को दोस्त मुहम्मद ने आत्मसमर्पण कर दिया जिसे बन्दी बनाकर कलकत्ता भेज दिया गया।
- दोस्त मुहम्मद के पुत्र अकबर खां ने अपने साथियों के साथ अंग्रेज राजदूत बर्न्स को मार डाला। 23 नवम्बर 1841 को अंग्रेज सेनाओं को पराजित हो संधि करनी पड़ी। संधि के अनुसार अंग्रेजी सेना ने अफगानिस्तान खाली करना स्वीकार किया।
- 6 जनवरी 1942 को वापस आ रही सेना पर हमला कर अफगानों ने 16 हजार अंग्रेज सैनिकों को मौत के घाट उतार दिया।
- डॉ. ब्राउन नामक एकमात्र अंग्रेज जीवित बच सका जिसने इस घटना की सूचना दी। बदला लेने के लिये सेनापति नॉट और पॉलक के नेतृत्व में अंग्रेज सेना ने काबुल और गजनी को बर्बरतापूर्वक लूटा। क्षुब्ध अफगानों ने शाहशुजा का वध कर दिया।

पंजाब

- सुकरचकिया मिसल के प्रमुख महासिंह के घर में 2 नवम्बर 1780 को जन्मे रणजीत सिंह ने अपने रणकौशल और दूरदृष्टि के बल पर अपने राज्य का विस्तार किया और लाहौर तथा अमृतसर पर अधिकार कर लिया।
- 12 अप्रैल 1801 को वैशाखी के दिन पंजाब के प्रमुख सरदारों ने उन्हें महाराजा घोषित किया। प्रमुख सिख संत बाबा साहिब सिंह ने उनका राजतिलक किया।
- 1806 में उन्होंने सैन्य अभियान कर दिल्ली के निकट कैथल तक अपनी सीमा बढ़ा ली।
- अंग्रेज सेनापति मेटकाफ के अपनी सीमाओं को सतलज तक सीमित रखने के आग्रह की अनदेखी करते हुए महाराजा ने 1808 में फरीदकोट, मलेरकोटला और अम्बाला को भी जीत लिया।
- 1807 में नेपोलियन और रूस के जार के बीच संधि हो गयी थी। इसके चलते भारत पर आक्रमण की संभावना से सशंकित लॉर्ड मिन्टो ने महाराजा रणजीत सिंह के साथ रूसी आक्रमण के समय सहयोग की संधि की।
- अंग्रेजों ने सिख-अफगान युद्ध के समय तटस्थ रहने का आश्वासन महाराजा को दिया तथा सतलज के पार सहित पूरे पंजाब का महाराजा स्वीकार किया।
- नेपोलियन के आक्रमण का भय समाप्त होते ही अंग्रेजों ने कमाण्डर ऑक्टरलोनी के नेतृत्व में एक बड़ी सेना पंजाब की ओर भेजी। परिस्थिति को समझते हुए महाराज ने 25 अप्रैल 1809 को अंग्रेजों के साथ अमृतसर की संधि की।
- इस संधि के अनुसार जहां महाराजा को सतलज के पार के इलाके अंग्रेजों के लिये छोड़ने पड़े वहीं कम्पनी ने महाराजा को संप्रभु नरेश के रूप में स्वीकार किया जिससे उन्हें सतलज के उत्तर-पश्चिम में विस्तार का अवसर मिला।
- इसका लाभ उठाते हुए उन्होंने 1818 में मुल्तान, 1819 में कश्मीर, 1834 में पेशावर तथा 1837 में जमरुद

पर अधिकार कर लिया।

- ❖ यह इस दृष्टि से ऐतिहासिक है कि शताब्दियों बाद भारत की सीमाऐं हिन्दुकुश तक पहुंची थी। इस समय महाराजा की सेना में 75 हजार सैनिक थे जिनके नेतृत्व और प्रशिक्षण के लिये फ्रांसीसी, जर्मन, अमेरिकी, यूनानी, रूसी, स्कॉटिश, अंग्रेज तथा स्पेनिश अधिकारी नियुक्त थे।
- ❖ 1839 में महाराजा की मृत्यु के साथ ही सिख साम्राज्य में अराजकता प्रारंभ हो गयी। अगले छः वर्षों में 4 राजा बदले गये। अंग्रेज ऐसे अवसर की ताक में थे।
- ❖ छोटे-बड़े अनेक संघर्षों के बाद 10 फरवरी 1846 को सतलज के नदी तट पर सबरांव के युद्ध में लाहौर की निर्णायक हार हुई।
- ❖ 9 मार्च 1846 को हुई लाहौर संधि के अनुसार सतलज नदी के पार के सभी क्षेत्र हमेशा के लिये छोड़ने पड़े, सतलज और व्यास के बीच के सभी दुर्ग कम्पनी के अधिकार में चले गये, युद्ध क्षतिपूर्ति के रूप में डेढ़ करोड़ नानकशाही रुपये न दे पाने की स्थिति में दरबार में कम्पनी का रेजीडेंट नियुक्त किया गया तथा अंग्रेजी सेना के लिये लाहौर का किला खाली करना पड़ा।
- ❖ अल्पवयस्क दिलीप सिंह को राजा घोषित कर राजमाता जिंदा कौर को उसका संरक्षक नियुक्त किया गया।
- ❖ 16 दिसम्बर 1846 को राजमाता जिंदा कौर और वजीर लाल सिंह को कश्मीर में विद्रोह भड़काने का आरोप लगाकर अपदस्थ किया और डेढ़ लाख वार्षिक पेंशन देकर बनारस भेज दिया।
- ❖ पंजाब का प्रशासन चलाने के लिये 8 सरदारों की समिति बनायी गयी जिसका अध्यक्ष हेनरी लारेंस को बनाया गया। पूरा पंजाब अब अंग्रेजों के नियंत्रण में था।
- ❖ 1849 में मुल्तान के गवर्नर मूलराज के नेतृत्व में एक बार फिर अंग्रेजों को चुनौती दी गयी।
- ❖ 13 जनवरी और 21 जनवरी को क्रमशः चिलियांवाला और चिनाब के तट पर युद्ध में पराजय के बाद 29 मार्च 1849 को गवर्नर जनरल लॉर्ड डलहौजी ने पंजाब को पूरी तरह कम्पनी के साम्राज्य में विलीन कर लिया।

❖ ❖ ❖

अध्याय – 3

दमनकारी नीतियां और उनका प्रतिकार

डलहौजी की हड़प नीति

- 37 वर्ष का युवा डलहौजी 1848 में पूरे भारत को निगलने का सपना लेकर ही भारत आया था।
- संतानहीन राजाओं को दत्तक लेने की आज्ञा नहीं देने का निर्णय तो कम्पनी के निदेशकों ने 1834 में ही ले लिया था किन्तु इसे कठोरतापूर्वक लागू करने का काम लॉर्ड डलहौजी ने किया। पंजाब और पीगू (बर्मा) को युद्ध में जीत कर वह कम्पनी में मिला ही चुका था।
- डलहौजी ने रियासतों को तीन श्रेणियों में बांटा—(1) स्वतंत्र (2) अधीनस्थ और (3) आश्रित
- पहली श्रेणी के राज्य संप्रभु थे। दूसरी श्रेणी में स्वतंत्र किन्तु करदाता राज्य थे।
- तीसरी श्रेणी उन राज्यों की थी जिनका निर्माण अंग्रेजों ने ही किया था। इस श्रेणी में अंग्रेजों ने अपने कृपापात्र लोगों को सनद देकर राजा नियुक्त किया था और वे पूरी तरह उन पर आश्रित थे।
- स्वतंत्र राजाओं को गोद लेने का अधिकार था।
- अधीनस्थ राजाओं से यह अधिकार कम्पनी छीन सकती थी और आश्रितों को यह अधिकार था ही नहीं।
- इन सिद्धान्तों का उपयोग करते हुए उसने सतारा, जैतपुर, झांसी, नागपुर, उदयपुर, सम्बलपुर आदि अनेक रियासतों का विलय कर लिया।
- अवध और बरार को उसने कुशासन का आरोप लगा कर हस्तगत कर लिया। उसने कम्पनी के अधिकार क्षेत्र में डेढ़ लाख वर्ग मील का विस्तार किया।

लूट के आंकड़े

- अमेरिकी लेखक ब्रुक एडम्स के अनुसार— "शायद जब से दुनिया बनी है, किसी पूंजी से कभी भी इतना लाभ नहीं हुआ जितना भारत की लूट से, क्योंकि 50 वर्ष तक कोई भी देश ब्रिटेन का मुकाबला नहीं कर सका।"
- वैसे तो सभी यूरोपीय शक्तियां भारत में लूट के लिये ही आयी थीं और यथाशक्ति उन्होंने ऐसा किया भी, किन्तु अंग्रेजों ने अपनी सैनिक शक्ति और कुटिल नीति के बल पर अधिकांश भारतीय भू-भाग और समुद्री क्षेत्र पर एकाधिकार स्थापित कर लिया।
- पहले चरण में उन्होंने भारतीय रियासतों पर कब्जा किया दूसरे चरण में उन्होंने राजस्व वसूली के इतने बर्बर तरीके अपनाये कि देश में कृत्रिम अकालों की पूरी श्रृंखला चली।
- उदाहरण के लिये बंगाल में कम्पनी का शासन स्थापित होते समय किसानों से प्राप्त होने वाला राजस्व जहां लगभग 6 लाख पौण्ड था वहीं 1793 में लॉर्ड कार्नवालिस के समय तक यह राशि बढ़कर 34 लाख

पौण्ड हो गयी।

- कम्पनी शासन के दो दशकों के भीतर ही जहां दुर्भिक्ष से लगभग एक करोड़ लोगों की मृत्यु हुई वहीं राजस्व चुकाने में असमर्थ किसानों ने खेती करना ही छोड़ दिया।
- 1798 में लॉर्ड कार्नवालिस द्वारा भेजी गयी एक रिपोर्ट के अनुसार—कम्पनी राज की एक तिहाई भूमि अब बंजर और जंगल में बदल चुकी है जिसमें जंगली जानवर रहते हैं।
- तीसरा चरण भारतीय पूंजी के बल पर औद्योगिक विकास था। इसके अंतर्गत ब्रिटेन में बने सामान को भारतीय बाजारों में खपाने और भारतीय माल को बाजारों से बाहर करने का षड्यंत्र रचा गया। इसके लिये उन्होंने आयात और निर्यात नीति को इस प्रकार गढ़ा कि व्यापार संतुलन ब्रिटेन के पक्ष में हो गया।
- ढ़ाका की मलमल पर ब्रिटेन में प्रतिबंध लगा दिया गया।
- आयातित रेशम और सूती कपड़े पर भारत में 3.5 प्रतिशत चुंगी थी।
- इसके विपरीत ब्रिटेन में हिन्दुस्तानी सूती पर 10 प्रतिशत और रेशमी कपड़े पर 20 प्रतिशत चुंगी ली जाती थी।
- हिन्दुस्तानी छींट की ब्रिटेन में लोकप्रियता को देखते हुए उस पर 78 प्रतिशत चुंगी लगायी गयी।
- वर्ष 1800 में भारत से लगभग 32 हजार गांठ कपड़ा निर्यात हुआ था जो दो दशक में घटकर 4 हजार गांठ से भी कम रह गया।
- दूसरी ओर 1824 में 10 लाख गज कपड़ा ब्रिटेन से आयात किया गया जो 1837 में बढ़कर 6.5 करोड़ गज हो गया।
- नील की खेती और निर्यात लूट का एक और साधन था। इसकी विश्व भर में बढ़ी हुई मांग को देखते हुए अंग्रेजों ने किसानों के लिये भूमि के एक हिस्से पर नील की खेती अनिवार्य कर दी थी।
- बंगाल में सवा रुपये प्रति पौण्ड खरीदी गयी नील को कम्पनी 5 से 7 पौण्ड में बेचती थी। उससे होने वाले लाभ की कल्पना केवल इस आंकड़े से हो सकती है कि वर्ष 1803 में 1,28,000 मन नील का उत्पादन हुआ था।
- भारतीय निर्यात को पूरी तरह समाप्त करने के लिये कम्पनी नेवीगेशन एक्ट लेकर आयी। इसके आधार पर भारत को किसी भी देश के साथ व्यापार करने से वंचित कर दिया गया।
- 19वीं शताब्दी में अंग्रेजों द्वारा दिये गये आंकड़ों के अनुसार ही कुल 31 बार अकाल पड़ा जिसमें 2 करोड़ 15 लाख लोग भूख से मर गये। जिस समय भारतीय अन्नाभाव में दम तोड़ रहे थे, उस समय भारी मात्रा में गेंहू और चावल ब्रिटेन भेजा जा रहा था।
- ब्रिटेन के ही एक संसद सदस्य सर लेविस ने कहा कि, ईस्ट इंडिया कम्पनी की सरकार से अधिक भ्रष्ट, दुराचारी और लुटेरी सरकार सभ्य संसार के इतिहास में कभी नहीं हुई।

सन्यासी विद्रोह

- प्लासी में अंग्रेजों की जीत के केवल छःवर्ष बाद ही बंगाल (वर्तमान बांग्लादेश सहित) और बिहार में 1763 में पहला सशस्त्र विद्रोह हुआ जिसका नेतृत्व सन्यासियों ने किया।

- उन्होंने विद्रोह का लक्ष्य आर्थिक उपलब्धियां अथवा रोजगार की प्राप्ति नहीं बल्कि देश की स्वतंत्रता रखा। उन्होंने इसके लिए विद्रोहियों के समक्ष आत्मबलिदान का लक्ष्य रखा।
- मार्च 1763 में राजशाही जिले की रामपुर बोआलिया की अंग्रेज कोठी पर हमला हुआ। उसके व्यवस्थापक बेनेट को कैद कर पटना भेज दिया गया जहां वह विद्रोहियों के हाथों मारा गया। कोचबिहार के सेनापति रूद्रनारायण ने अंग्रेजों के विरुद्ध विद्रोहियों से सहायता मांगी। अंग्रेज सेनापति लेफ्टिनेंट मारिसन के पहुंचने के पूर्व ही विद्रोहियों ने कोचबिहार पर कब्जा कर लिया। पहली बार के युद्ध में विद्रोहियों को पीछे हटना पड़ा किन्तु उन्होंने अंग्रेजी सेना को कमजोर करने के लिए छापामार युद्ध की नीति अपनायी। अगस्त 1766 के अंत में हुए घमासान युद्ध में मारिसन की सेना पराजित हो भाग खड़ी हुई।
- संघर्ष का यह क्रम जारी रहा। बंगाल और बिहार में स्थान-स्थान पर अंग्रेजों और विद्रोहियों में सैकड़ों झड़पें और दर्जनों बड़ी लड़ाइयां हुईं।
- विद्रोहियों ने अपनी स्थिति मजबूत करने के लिए बगुड़ा, दिनाजपुर और जलपाईगुड़ी जिलों में अनेक दुर्ग बनाये जिसमें महास्थान गढ़ और पौंण्ड्रवर्धन के दुर्ग विशेष उल्लेखनीय हैं।
- स्थिति हाथ से निकलती देख गवर्नर जनरल वॉरेन हेस्टिंग्ज ने कड़ी कार्रवाई की घोषणा की। घोषणा पर अमल करते हुए विद्रोही होने या विद्रोहियों का सहयोग करने के आरोप में किसानों को बिना मुकदमे और सुनवाई के ही बीच गांव में फांसी दी गयी और भय पैदा करने के लिए उनके शव को लटका कर रखा गया। जिन्हें फांसी दी उनके परिवार के सभी लोगों को हमेशा के लिए गुलाम बना लिया गया।
- ढाका के रमना के काली मंदिर के स्वामी जी के अतिरिक्त सन्यासी रामानंदगोसाईं, भवानी पाठक, देवी चौधरानी, पीतांबर, अनूप नारायण, श्रीनिवास, कृपानाथ, मजनू, मूसा शाह तथा नूरूल मुहम्मद आदि की इस विद्रोह में महत्वपूर्ण भूमिका रही। यह संघर्ष लगभग चार दशक तक चला।
- प्रसिद्ध बांग्ला साहित्यकार बंकिम चंद्र चट्टोपाध्याय ने सन्यासी विद्रोह को आधार बनाकर आनंदमठ उपन्यास लिखा।
- कालांतर में सन्यासी विद्रोह बंगाल के क्रांतिकारियों का प्रेरणास्रोत बना।
- आनंदमठ ने क्रांतिकारियों की गीता का स्थान लिया।
- इस उपन्यास में सन्यासियों द्वारा भारत माँ की स्तुति में गाये गये गीत वंदेमातरम ने उत्तर से दक्षिण और पूर्व से पश्चिम तक हर देशभक्त भारतवासी को उव्देलित किया, क्रांति के लिए सन्नध्द किया।
- स्वतंत्र भारत में राष्ट्रगीत बना बंकिम रचित यह गान आज भी करोड़ों भारतीयों को राष्ट्रीयता की प्रेरणा दे रहा है।

कारीगरों का शोषण

- 18वीं सदी के अंतिम भाग में पूर्व और दक्षिण भारत का वस्त्र उद्योग बड़ी उन्नति पर था।
- जब अंग्रेजों ने कब्जा किया उस समय पूर्वी भारत (बंगाल, बिहार और उड़ीसा) में दस लाख और दक्षिण भारत में पांच लाख से ज्यादा कारीगर सूती कपड़े के उत्पादन में लगे थे।
- अंग्रेज व्यापारियों द्वारा उनके शोषण का अनुमान इस बात से ही लगाया जा सकता है कि सबसे अच्छे गाढे

का जो थान लंदन में उस समय 22 रुपये में बिकता था, भारतीय बुनकरों को उसका भुगतान 3-4 रुपये ही किया जाता था।

- 23 जुलाई 1787 को नये कानून बनाये गये। इस कानून के अंतर्गत व्यवस्था की गयी कि जो जुलाहा समझौते के अनुसार कम्पनी को कपड़ा दिये बिना किसी अन्य व्यापारी को बेचे तो उसे दीवानी अदालत बंद कर देगी। बेचा गया सारा कपड़ा जब्त कर कम्पनी को दिया जायेगा और सारा अदालती खर्च जुलाहे को अदा करना पड़ेगा। इसके बावजूद भी वह समझौता लागू रहेगा और बुनकर को उसे पूरा करना होगा। यहां तक कि जो जुलाहे कम्पनी से पेशगी फिर नहीं लेना चाहते उन्हें 15 दिन पहले इसकी लिखित सूचना कम्पनी के पास भेजनी होगी।
- 30 सितंबर 1789 में पूरक नियम पास कर यह कानून और कठोर बना दिये गये। यह नियम जोड़ा गया कि जो बुनकर निश्चित अवधि में कपड़ा नहीं देगा उसे पेशगी वापस करने के अलावा हर थान पर 35 प्रतिशत जुर्माना भी देना पड़ेगा।
- इस शोषण के परिणामस्वरुप बुनकर पीढ़ियों से जमा हुआ कारोबार छोड़कर अन्यत्र जा बसे।
- त्रस्त बुनकरों ने स्वयं ही अपने अंगूठे कटवा डाले ताकि कम्पनी के प्रतिनिधि उन्हे रेशम की कताई के लिए बाध्य न कर सकें।

अफीम का व्यापार

- 17 वीं शताब्दी में देश के कुछ भागों में अफीम की खेती होती थी।
- 18 वीं शताब्दी में पटना और इसके आसपास का क्षेत्र इसका एक प्रमुख केंद्र बन गया था। अंग्रेज व्यापारी ही नहीं बल्कि ईस्ट इंडिया कम्पनी के कर्मचारी तक अफीम के धंधे में कूद पड़े।
- 1772 में वॉरेन हेस्टिंग्ज गवर्नर जनरल बन कर भारत आया। अफीम के व्यापार में होने वाले मोटे मुनाफे ने उसे आकर्षित किया। उसने व्यक्तिगत व्यापार पर रोक लगा दी और कम्पनी सरकार की ओर से अफीम के व्यापार के लिये एक कमेटी बनाने का फैसला किया।
- अफीम के व्यापार और अंग्रेजों के मुनाफे का अनुमान इस तथ्य से लगाया जा सकता है कि 1770 में औसत वार्षिक निर्यात 800 पेटी का था जो 1847-48 में बढ़कर 30,000 पेटी से अधिक हो गया। हर पेटी में दो मन अफीम होती थी। किसानों का शोषण कर सस्ती दर पर ली गयी अफीम को चीन तथा अन्य देशों में ले जाकर कम्पनी ऊंचे दाम पर बेचती थी।
- वॉरेन हेस्टिंग्ज द्वारा की गयी लूट खसोट इस सीमा तक बढ़ गयी कि उस पर ब्रिटेन की संसद में यह मामला चला।

ईसाई मिशनरी

- 19वीं शताब्दी के प्रारंभ तक यूरोपीय देशों की अनेक ईसाई संस्थाओं द्वारा ईसाइयत के प्रचार के लिए प्रयास होते रहे।

- कम्पनी के डायरेक्टर चार्ल्सग्रांट ने इस में बढ़ चढ़कर भाग लिया। उसने ईसाई पादरियों के सहयोग से एक छोटा सा ग्रंथ तैयार किया। इसका नाम था 'ए प्रपोजल फॉर एस्टेब्लिशिंग प्रोटेस्टेंट मिशन इन बंगाल एंड बिहार'। इस ग्रंथ की प्रतियाँ इंग्लैंड में विलियम विलबर फोर्स, कैंण्टन बरी के आर्चबिशप आदि को भेजी गयी तथा सरकार द्वारा ईसाई मत के प्रचार के लिये खुले समर्थन की मांग की गयी। कहा गया कि भारत को सदैव उपनिवेश बनाकर रखने के लिए भारत के हिंदुओं को ईसाई बनाना आवश्यक है।
- 1813 के चार्टर एक्ट में उपरोक्त धार्मिक मुद्दा 36 के मुकाबले 89 से स्वीकृत हो गया तथा एक्ट में एक नई धारा 23वीं जोड़ी गयी जिसमें सरकारी रूप से ईसाइयत के प्रचार को ब्रिटिश सरकार की सहमति मिल गयी।
- 1850 तक ईसाइयों के 260 केंद्र बन गये थे जिसमें 360 विदेशी पादरी तथा लगभग 500 भारतीय प्रचारक हो गये थे जिन्होंने 1857 के संघर्ष में अंग्रेजी राज्य के प्रति अटूट भक्ति दिखाई।
- ईसाई पादरी सैनिक छावनियों में, कारागार में कैदियों को ईसाइयत का पाठ पढ़ाने, बाइबल की प्रतियाँ बाँटने का कार्य करते थे। सेना में पादरियों को कर्नल तक के पदों पर नियुक्त किया जाता था।

वनवासियों का संघर्ष

- अंग्रेजों के प्रति असंतोष और 1857 विद्रोह की पृष्ठ भूमि तैयार करने में वनवासियों की भूमिका बेहद महत्वपूर्ण रही। उल्लेखनीय है कि भारत में अंग्रेजी सत्ता को सबसे कठिन चुनौती वनवासियों ने ही दी।
- अंग्रेजों के प्रति वनवासियों का पहला विद्रोह 1780-84 के बीच उभरकर सामने आया।
- इन चार वर्षों में वनवासियों ने पादरियों द्वारा प्रसारित किए जा रहे ईसाई मत का विरोध किया था।
- संथाल परगना में अंग्रेजों के विरुद्ध इस विद्रोह के सूत्रधार थे बाबा तिलका माझी, जिन्होंने अंग्रेज कलेक्टर क्लाइव को ताड़ के पेड़ से तीर चला कर मार डाला था। इसके बाद महाराष्ट्र में भी अंग्रेजों के विरुद्ध वनवासियों ने बगावत की, जो धीरे-धीरे समूचे भारत में फैलती चली गयी।
- रांची जिले के तमाड़ थाना में अंग्रेज अधिकारियों के विरुद्ध 1789 में विद्रोह हुआ।

बिरसा मुंडा : धरती आबा

बिरसा मुंडा एक भारतीय स्वतंत्रता सेनानी और वनवासी नेता थे जिन्होंने ब्रिटिश शासन के विरुद्ध विद्रोह किया। उनका जन्म 15 नवंबर, 1875 को झारखंड के खूंटी जिले के उलुहातु नामक गांव में हुआ था। 1890 के दौरान वे एक सफल नेतृत्व के रुप में सामने आये और उन्होंने सूखा पड़ने और सांस्कृतिक परिवर्तनों की दोहरी चुनौती के विरुद्ध विद्रोह खड़ा कर दिया। 3 मार्च, 1900 को उन्हें उनकी वनवासी गुरिल्ला सेना के साथ, चक्रधरपुर के जामकोपाई जंगल में ब्रिटिश सैनिकों द्वारा गिरफ्तार करके रांची जेल में डाल दिया गया। 9 जून, 1900 को 25 साल की उम्र में रांची जेल में ही उनकी मृत्यु हो गई।

सिदो और कान्हू मुर्मू: अमर संथाल

सिदो मुर्मू संथाल की क्रांति का नेतृत्व कर रहे थे, जो पूर्वी भारत, वर्तमान झारखंड में ब्रिटिश साम्राज्यवाद और जमींदारी व्यवस्था के विरुद्ध एक हूल विद्रोह था। सिदो मुर्मू वह व्यक्ति हैं जिनका इतिहास में बहुत महत्व है और उस दौरान बहादुरी से लड़ने वाले स्वतंत्रता सेनानी के नाम से जाने जाते हैं। सिदो मुर्मू अकेले नहीं थे उनका एक भाई था जो इस पूरी लड़ाई में उनका साथ निभा रहा था, उसका नाम था कान्हू मुर्मू। दोनों का जन्म साहिबगंज जिले के भोगनाडीह गांव में हुआ था। संथाल क्रांति 1857 के स्वातंत्र्य समर से पहले 1855 में ही ब्रिटिश औपनिवेशिक शासन के शोषण के विरुद्ध संथाल हूल के नाम से घटित हो चुकी थी।

- 1794-95 में यहां एक बार फिर विद्रोह हुआ।
- पुनः 1805 और 1820 में यहां वनवासियों ने विद्रोह किया। वनवासियों के इस विद्रोही तेवर ने धीरे-धीरे किसानों को भी विद्रोह लिए प्रेरित किया।
- अंग्रेजों की नीतियों से असंतुष्ट किसानों ने 1813-14 और 1831 के बीच देशभर में कई स्थानों पर विद्रोह किया।
- 1831 का किसान आंदोलन इतना तीव्र था कि इसे दबाने में अंग्रेजों को तीन वर्ष लग गये।
- देश का कोई भी कोना छिट-पुट होने वाले विद्रोहों से अछूता नहीं था।
- आंध्रप्रदेश, गुजरात, महाराष्ट्र, असम, बिहार हर स्थान पर कहीं किसानों ने तो कहीं स्थानीय वनवासी समुदायों ने अंग्रेजों के विरुद्ध झंडा उठाया।
- बिहार के संताल परगना में सिदो-कान्हू ने विद्रोह का नेतृत्व किया जिसमें दस हजार से अधिक संथालों ने अपना बलिदान दिया।
- असम में खासी समुदाय के साथ अंग्रेजों के अमानुषिक व्यवहार, सार्वजनिक अवहेलना, उपेक्षा आदि के परिणामस्वरुप खासियों का जो विद्रोह फूटा उसे दबाने के लिए अंग्रेजों को चार साल की लंबी लड़ाई लड़नी पड़ी।
- अंग्रेजों के जुल्मों से परेशान भीलों ने भी अंततः 1818 में विद्रोह कर दिया, जो 1819 तक व्यापक स्तर पर फैल गया। भीलों के विद्रोह को कुचलने के लिए अंग्रेजों ने आठ हजार से अधिक भील विद्रोहियों को पकड़ कर उनका अमानुषिक दमन किया।
- वनवासियों को समाज की मुख्यधारा से अलग रखने की अंग्रेजों ने हर संभव कोशिश की। ब्रिटिश सरकार ने कई अधिनियम बनाकर गुर्जर, भील, दुसाध, मल्लाह आदि जो लगातार अंग्रेजों से लड़ते रहे, को अपराधी जाति घोषित कर दिया और उन्हें शिक्षा व नौकरी से पूरी तरह वंचित कर दिया। लेकिन विद्रोह की जो आग इन वनवासियों ने प्रज्ज्वलित की थी, उसकी तपिश से किसान आंदोलन और राष्ट्रीय आंदोलन भी अछूता नहीं रह सका।

❖ ❖ ❖

अध्याय- 4

क्रांति का श्रीगणेश

उल्लेखनीय है कि 1857 का संग्राम कोई अचानक भड़का संघर्ष नहीं था बल्कि इसकी पृष्ठभूमि एक लंबे अरसे से तैयार हो रही थी। वर्षों से अंग्रेजों व ईस्ट इंडिया कम्पनी के शोषण की शिकार जनता छिटपुट विद्रोह तो पहले भी करती आई थी, लेकिन इसे राष्ट्रीय स्वरूप नहीं दिया जा सका था।

1757 में प्लासी का युद्ध जीतने के बाद देश भर में ईस्ट इंडिया कम्पनी ने गांव की सामाजिक-आर्थिक व्यवस्था को तोड़ने का प्रयास आरंभ कर दिया। कम्पनी ने एक ओर जमीन पर अधिकार करना शुरू कर दिया तो दूसरी ओर किसानों, मजदूरों एवं बुनकरों पर अत्याचारों का सिलसिला भी शुरू हो गया। क्रांति की पृष्ठभूमि तो यहीं से शुरू हो गयी थी।

न्याय नहीं मिला

- छत्रपति शिवाजी के वंशज प्रताप सिंह के विश्वासपात्र रंगो बापू गुप्ते ने ऐसे समय में ईस्ट इंडिया कम्पनी के अनाचार के विरुद्ध ब्रिटेन जाकर अपील करने का निश्चय किया।
- फरवरी 1843 में ईस्ट इंडिया कम्पनी द्वारा अपनी बात रखने के लिए रंगो बापू को बुलाया गया। रंगो बापू ने दृढ़ता से अपना पक्ष रखा किंतु कम्पनी ने अपने निर्णय को जस का तस रखा। रंगो बापू ने तेरह वर्षों तक लंदन में रहकर अपना अभियान जारी रखा।
- 1853 तक स्थान-स्थान पर जाकर लोगों से मिलते, सभाओं को संबोधित करते, ईस्ट इंडिया कम्पनी के अत्याचार और शोषण की जानकारी देते रहे लेकिन परिणाम शून्य ही रहा।

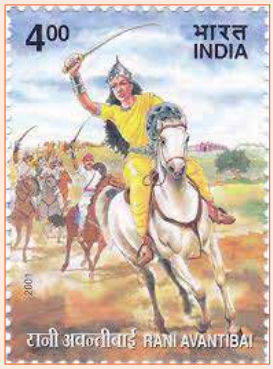

रानी अवन्तीबाई : सिवनी, मध्य प्रदेश के मनकहड़ी नामक गांव में 16 अगस्त 1831 को जन्मी (मोहिनी)अवन्तीबाई के पिता राव जुझार सिंह लोधी ठाकुरों के जमींदार थे। उनका विवाह रामगढ़ रियासत के राजा लक्ष्मण सिंह के पुत्र विक्रमाजीत से हो गया। रानी के दो पुत्र हुए बड़े पुत्र का नाम था अमान सिंह तथा छोटे पुत्र का शेर सिंह। कुछ समय बाद राजा विक्रमाजीत मानसिक विकार से कुछ विक्षिप्त से रहने लगे तो इस स्थिति का लाभ उठाते हुए राजनीति के नाम पर ईस्ट इण्डिया कम्पनी ने 13 सितम्बर 1851 को उन्हें विक्षिप्त करार देकर रामगढ़ राज्य को 'कोर्ट ऑफ वॉर्ड्स' के अधीन कर लिया। रानी अवन्तीबाई ने इसे अस्वीकार कर दिया। 1857 में राजा साहब की मृत्युपरांत अंग्रेजों ने अपनी राज्य हड़प नीति के अन्तर्गत रामगढ़ को हड़पने की योजना बनाई। राज्य में प्रशासक नियुक्त कर शेख मोहम्मद तथामोहम्मद

अब्दुल्ला को रामगढ़ भेजा, जिससे रामगढ़ रियासत अंग्रेजों के अधिकार क्षेत्र में आ जाये। रानी ने पहले खैरी, फिर देवहारगढ़ में ब्रिटिश सेना के साथ संघर्ष किया। अवन्तीबाई ने छापामार युद्ध का सहारा लिया और रामगढ़ में अंग्रेजों की सेना को छिन्न-भिन्न कर दिया। अंग्रेजों ने उत्तर भारत से और अधिक सेना बुला ली। रानी ने हार नहीं मानी। विवश होकर रानी को किला छोड़ना पड़ा, रानी देवहारगढ़ के जंगलों में चली गई। अंग्रेजों ने देवहारगढ़ की पहाड़ियों को भी घेर लिया। 18 दिन तक छापामार युद्ध चला। 20 मार्च 1858 को आमने-सामने की लड़ाई प्रारम्भ हो गई। रानी ने वाडिंग्टन पर गोली चलाई लेकिन वो उसके टोप को छूती हुई निकल गई। परन्तु वाडिंग्टन की गोली रानी के हाथ पर लगी, रानी के हाथ से तलवार छूट गई। जब रानी को लगने लगा कि वो शत्रु के हाथों पकड़ी जाने वाली है तो उसने अपने साथी गिरधारी की कटार छीनकर घुनसी नाले के निकट आत्मोसर्ग कर लिया और मातृभूमि की बलिवेदी पना शीश चढ़ा गई।

- ❖ इसी बीच भारत में दत्तक विधान को नामंजूर करते हुए डलहौजी ने राज्यों को हडपने की नीति अपनायी।
- ❖ उसने 1848 में सातारा की गद्दी पर दखल कर दिया। 1851 में बाजीराव द्वितीय की मृत्यु के बाद नानासाहेब को उसका उत्तराधिकारी तो स्वीकार किया गया किंतु उनकी पेशवाई छीन ली गयी और पेंशन बंद कर दी गयी।
- ❖ नानासाहेब पेशवा ने अपना पक्ष रखने के लिए अजीमुल्ला खां को लंदन भेजा किंतु उन्हें भी असफलता ही हाथ लगी।
- ❖ 1853 में झांसी के राजा गंगाधर राव की तथा नागपुर के भोसले की मृत्यु के पश्चात इन राजाओं द्वारा लिए गये दत्तक पुत्रों को उत्तराधिकार से वंचित करते हुए उनके राज्य भी अंग्रेजी राज्य में मिला लिए गये।

कुमारी मैना : पेशवा नाना साहब की मुँहबोली पुत्री मैना को ब्रिटिश सत्ता के निरंकुश शासन ने पेड़ से बांधकर जिन्दा आग में झोंक दिया क्योंकि उसने पेशवा का पता बताने से मना कर दिया था। नाना की अनुपस्थिति में अंग्रेजों ने कानपुर पर चढाई कर दी। मैना को जब यह पता चला कि अंग्रेज महिलाओं की इज्जत के साथ खिलवाड़ कर रहे हैं, दुधमुँहे बच्चों तक को उन्होंने नहीं छोड़ा है तो उसका खून खौल उठा। मैना उस समय नाना के आदेश का पालन करते हुए अपने अंगरक्षक के साथ कुछ अंग्रेज स्त्री और बच्चों को सुरक्षित स्थान पर छोड़ने जा रही थी। रास्ते में ही अंग्रेजों ने उन पर हमला कर उसके अंगरक्षक को मार दिया और मैना को गिरफ्तार कर लिया। मैना से उसके पिता और अन्य साथियों का पता पूछा गया पर मैना चट्टान की तरह अडिग रही। उसे पेड़ से बांध दिया गया, अनेक यातनाएं दी गईं। प्यास से उसका गला सूख गया लेकिन उसे एक बूंद पानी तक नहीं दिया गया। उसे भय दिखाने के लिए पेड़ के चारों ओर लकड़ियां चुनकर चिता बना दी गई। उससे कहा गया कि अभी भी समय है बता दो, नहीं तो जिंदा भून देंगे। उत्तर में मैना ने उनके मुंह पर थूक दिया। चिता में आग लगा दी गई फिर भी वह न चीखी, न चिल्लाई। चिता से अधजली हालत में निकाल कर भी उसको पूछा गया कि अभी भी समय है, उसकी जान बख्शी जा सकती है लेकिन उसने निडर होकर कहा कि कर लो जो करना हो, वह कुछ नहीं बताएगी। उसे दोबारा चिता में झोंक दिया गया।

ब्रह्मावर्त में

- लंदन में ही निराश अजीमुल्ला की भेंट रंगो बापू से हुई। अब उनकी यह धारणा बन गयी थी कि इन प्रयत्नों के फलीभूत होने की कोई संभावना नहीं है और अब आगे के प्रयत्न भारत पहुंचकर ही किए जाने चाहिए। दोनों का ही मानना था कि अनुनय- विनय से काम नहीं चलने वाला है और संघर्ष के बिना अब बात बनेगी नहीं।
- बिठूर में नाना साहेब पेशवा के राजमहल में सेनापति तात्या टोपे, रंगो बापू और अजीमुल्ला एकत्र हुए।
- नाना साहेब पेशवा सरीखे रणनीतिकार यह अनुभव कर रहे थे कि अंग्रेजों से यदि मुक्ति पानी है तो संपूर्ण देश में सामूहिक प्रयत्न किए जाने की आवश्यकता है।
- दिल्ली से मैसूर तक के सब राजाओं के पास नानासाहेब ने अपने विशेष दूत भेज कर उन्हें उनकी प्रतिष्ठा तथा जनता के प्रति उनके कर्तव्य का स्मरण कराते हुए स्वातंत्र्य युद्ध की अनिवार्यता रेखांकित करते हुए उसमें उनकी आहुति का आह्वान किया।
- नाना साहिब ने तीर्थ यात्रा के बहाने देश में बन रहे अंग्रेज विरोधी वातावरण तथा क्रांति की तैयारियों का स्वयं आकलन करने के लिए प्रवास करने का निश्चय किया।
- इसकी सूचना उन्होंने अंग्रेज सरकार को भी दे दी। इस यात्रा में उनके साथ तात्या टोपे, अजीमुल्ला, बाला साहब, राव साहब आदि अनेक प्रमुख लोग थे।
- यात्रा के दौरान वे लखनऊ, कालपी, दिल्ली, अंबाला और शिमला तक गये।

स्वातंत्र्य समर के पहले बलिदानी: मंगल पांडेय

- सेना में यह खबर फैली कि अंग्रेजों द्वारा विदेश से मंगाई गयी नई एनफील्ड राइफल में जो कारतूस भरे जाएंगे उनके खोल को मुँह से खोलना होगा। यह भी चर्चा थी कि इसके खोल में ग्रीज़ के स्थान पर गाय और सुअर की चर्बी लगाई गयी है और यह अंग्रेजों का हिंदुओं व मुस्लिमों को धर्मभ्रष्ट करने का षड्यंत्र है।
- सेना ने नए कारतूसों का प्रयोग सबसे पहले कोलकाता के निकट बैरकपुर छावनी में करने का निश्चय किया।
- पलटन ने साहसपूर्वक इस आज्ञा को ठुकरा दिया साथ ही यह चेतावनी भी दी कि यदि जबरन इन कारतूसों का प्रयोग कराने की कोशिश की तो विद्रोह कर देंगे।
- अंग्रेजों को यह सह्य नहीं था किंतु वहां पर गोरी पलटन न होने के कारण भी कुछ कर भी नहीं सकते थे। उन्होंने बर्मा से एक टुकड़ी गोरी सेना को बुलाया जो मार्च माह में कोलकाता पहुंची।
- गोरी सेना के आने के बाद बंगाल रेजीमेंट की 19वीं पलटन को भंग करने का निश्चय किया गया। सैनिकों से शस्त्र छीन लिए गये और उन्हें छावनी से बाहर निकाल दिया गया।
- 35वीं बटालियन का सैनिक मंगल पांडे इस घटना को देख धैर्य नहीं रख सका। उसने हाथ में बंदूक लेकर सैनिकों को धर्म की रक्षा के लिए ललकारते हुए नारा दिया - मारो फिरंगी को !
- सार्जेंट मेजर ह्यूसन ने मंगल पांडे को बंदी बनाने का आदेश दिया किंतु इसके लिए एक भी सिपाही आगे

नहीं आया।

- मंगल पांडे की एक गोली ने उसको धराशायी कर दिया। उसकी दूसरी गोली घोड़े पर सवार लेफ्टिनेंट बॉब को लगी। वह संभल कर अपनी पिस्तौल निकालने की कोशिश कर ही रहा था कि मंगल ने अपनी तलवार से उसका काम तमाम कर दिया।
- स्थिति की गंभीरता को देखते हुए कर्नल व्हीलर तुरंत यूरोपियन सिपाहियों को लेकर परेड मैदान में पहुंचा।
- शत्रु के हाथ पड़ना निश्चित जानकर मंगल पांडे ने अपनी ही बंदूक से स्वयं की छाती में गोली मार ली और घायल होकर धरती पर गिर गये। शीघ्र ही उन्हें अस्पताल पहुंचाया गया।
- यह 29 मार्च 1857 का ऐतिहासिक दिन था जब क्रांति का पहला विस्फोट हुआ। सैनिक न्यायालय में मंगल पांडे पर अभियोग चलाया गया। उसके विरुद्ध साक्ष्य देने को भी कोई तैयार नहीं हुआ। न्यायालय में उन्होंने कहा -" मेरी गोली से जिन अंग्रेज अधिकारियों की मृत्यु हुई है, मेरा उनसे किसी भी प्रकार का व्यक्तिगत विद्वेष नहीं था। मेरा विद्वेष समस्त अंग्रेज जाति के साथ है जिसने हमें दासता की शृंखला में आबद्ध किया हुआ है।"
- न्यायालय ने मंगल पांडे को प्राणदण्ड दिया। 8 अप्रैल 1857 को इसकी तिथि निश्चित की गयी।
- बैरकपुर में उन्हें फांसी देने को कोई तैयारी नहीं हुआ तो कलकत्ता से जल्लाद बुलाना पड़ा।
- 8 अप्रैल 1857 को मृत्युदंड पाकर मंगल पांडे 1857 के स्वातंत्र्य समर के पहले बलिदानी बन गये।

सेना में हलचल

- क्रांति के लिए संकल्पबद्ध सैनिकों के रोष का जो प्रगटीकरण बैरकपुर छावनी में मंगल पांडे ने चिंगारी के रूप में किया था, अंबाला पहुंचते-पहुंचते वह अग्निशिखाओं में बदल गया था। अब बारी मेरठ की थी जहां उसे दावानल का रूप लेना था। जल्दी ही वह दिन भी आ गया।
- अभी तक के अनुभव से सावधान हो चुके अंग्रेजों ने नये कारतूसों का प्रयोग बहुत छोटे स्तर पर शुरू करने और एक बार इसमें सफलता मिलने पर सभी सैनिकों पर लागू करने का निर्णय किया।
- साथ ही सैनिकों के तीव्र विरोध को देखते हुए उन्होंने कारतूसों के प्रयोग के तरीके में संशोधन भी कर दिया था।
- अब उन सैनिकों को यह मुंह से काटना नहीं था बल्कि कारतूस पर लिपटे चर्बी वाले कागज को केवल हाथ से फाड़ना था।
- 24 अप्रैल को प्रातः काल उन्होंने घुड़सवार टुकड़ी के 90 सैनिकों को इन कारतूसों को प्रयोग करने का आदेश दिया लेकिन भारतीय सैनिक तो इससे पूर्व ही उन कारतूसों को हाथ भी न लगाने का निर्णय कर चुके थे।
- पांच सैनिकों को छोड़कर अन्य 85 सैनिकों ने कारतूसों का प्रयोग करने से स्पष्ट इंकार कर दिया। उन सभी के कोर्ट मार्शल का आदेश दे दिया गया।
- अंग्रेज सैन्य अधिकारी इन सैनिकों को अत्यंत कड़ा दण्ड देना चाहते थे ताकि बाकी सैनिकों को भी शिक्षा मिल सके।

- बैरकपुर का अनुगमन करते हुए 18 अप्रैल को अंबाला की दो भारतीयों पलटनों ने कारतूस लेने से इनकार कर दिया।
- अवध इररेगुलर इन्फेंट्री की सातवीं रेजीमेंट ने मई के आरंभ में इन कारतूसों का विरोध किया।
- 3 मई को लखनऊ में विद्रोह के चिन्ह पाये जाने पर तोपें सामने लगाकर सातवीं रेजिमेंट से हथियार ले लिए गये।

रोटी और कमल

- प्रश्न उठा कि सैनिकों और नागरिकों के बीच क्रांति का संदेश प्रसारित करने के लिए कोई एक ऐसा प्रतीक चुना जाये जो लोगों को जोड़ पाने में सहज ही सक्षम हो, साथ ही उसे प्रसारित करना आसान हो।
- पर्याप्त विचार के पश्चात इन क्रांतिवीरों ने रोटी और कमल को क्रांति का प्रतीक चुना। निश्चय हुआ कि हर गांव में चार रोटियां भेजी जाएंगी।
- इन रोटियों को स्वीकार करने का अर्थ होगा क्रांति का संकल्प। वह गांव ऐसी ही चार रोटियां बना कर अगले गांव में भेजेगा।
- इसी प्रकार क्रांति का संदेश लेकर एक छावनी से दूसरी छावनी तक कमल का फूल भेजा जायेगा।
- इतिहास गवाह है कि रोटी और कमल का यह प्रतीक देश भर में घूमता रहा तथा सैनिकों और नागरिकों में क्रांति का बीज बोता रहा लेकिन अंग्रेज सरकार इसका रहस्य न जान सकी।
- दिल्ली में जब यह चपातियां बांटी जा रही थी तो अंग्रेजों ने इसका स्रोत जानने के लिए बदरपुर थाने के थानेदार को अलीगढ़ तक भेजा किंतु वह कुछ भी पता लगा पाने में असमर्थ रहा।

अलख जगाते सन्यासी

- तात्या टोपे, रंगो बापू, अजीमुल्ला खां तथा विशेष दूत देशभर के राजा-रजवाड़ों में नाना साहिब का संदेश लेकर जा रहे थे।
- वहीं साधु-सन्यासी, फकीर-मौलवी आदि सैनिक छावनी में और आम जनता में स्वतंत्रता की अलख जगाते घूम रहे थे।
- ऐसे ही सन्दर्भ स्वामी पूर्णानंद तथा स्वामी विरजानंद की गढ़मुक्तेश्वर तथा हरिद्वार में हुई सभाओं के मिलते हैं जिसमें बड़ी संख्या में साधु-सन्यासियों तथा स्वातंत्र्य समर के नायकों ने भाग लिया।
- स्वातंत्र्यवीर सावरकर के शब्दों में – "सन 1857 ईसवी में स्वधर्म और स्वराज्य के देवता के अधिष्ठान की स्थापना के लिए जो स्वतंत्रता संग्राम आरंभ किया गया था उसका संकल्प किस दिन लिया गया? उस दिन, जिस दिन अंग्रेज व्यापारियों के मन में प्रथम बार हमारे भारतवर्ष की स्वतंत्रता का अपहरण कर उसको परतंत्रता के पाश में आबद्ध करने का अपवित्र विचार उदभूत हुआ। उसी दिन से हिन्दू भूमि के अंतःकरण में क्रांति चेतना का भी संचार हो गया था।"
- अंग्रेजी राज के प्रारंभिक छः वर्षों में केवल बंगाल राज्य में ही भयंकर अकाल के चलते एक करोड़ से ज्यादा लोगों की मौत हुई और राज्य की तिहाई से ज्यादा जनसंख्या समाप्त हो गयी।
- भारतीयों के साथ अंग्रेजों का अपमानजनक व्यवहार क्रोध की आग में घी का काम करता था।

- ❖ 9 मई 1857, शनिवार। सभी भारतीय सैनिकों को यूरोपियन सेना और तोपखाने के पहरे में खड़ा किया गया। आदेश की अवहेलना करने वाले सभी 85 सैनिकों के हथियार छीन लिए गये, वर्दियां उतरवा ली गयीं।
- ❖ जिस हवलदार ने कारतूस स्वीकार करने से मना किया था उसे तथा उस जैसे अन्य सैनिकों को 10 वर्ष तथा शेष सैनिकों को 5 वर्ष के कारावास की सजा सुनाने के बाद इन सभी सैनिकों को बंदी बना लिया गया और उनके हाथ-पैरों में हथकड़ी-बेड़ी डाल दी गयी।
- ❖ पदाति भारतीय सैनिकों को इस दृश्य को देखने के लिए विवश किया गया ताकि उन्हें भी सबक मिल सके।
- ❖ घटना की जानकारी नगर निवासियों में भी फैल गयी थी और उनके भी क्रोध का पारावार न था। आखिरकार निर्णय हुआ कि अपने साथियों को बंदीगृह से छुड़ा लिया जाए और अंग्रेजों को मारकर दिल्ली के लिए प्रस्थान किया जाए।
- ❖ 10 मई 1857 का ऐतिहासिक दिन। चर्च के घंटे बजे तो अंग्रेजों ने विशेष प्रार्थना के लिए चर्च में प्रवेश किया। तभी बैरकों में नारा गूंज उठा- "मारो फिरंगी को!"
- ❖ जिस मेरठ को अपने लिए सर्वाधिक सुरक्षित जान कर अंग्रेजों ने यहां कारतूसों के प्रयोग का निर्णय लिया था वही मेरठ विद्रोह की पहल कर भारत के इतिहास में अपना नाम स्वर्णाक्षरों में लिखा चुका था।
- ❖ स्वातंत्र्य समर का दावानल देखते ही देखते समूचे देश में फैल गया। दिल्ली सीमा प्रांत काशी, कानपुर, झांसी,

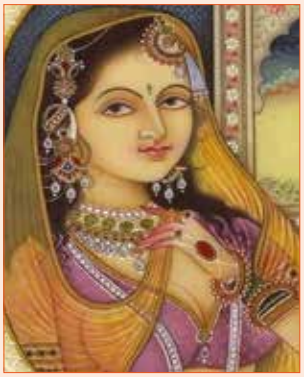

अजीजन बाई का जन्म 1833 में हुआ। उम्र बढ़ने के साथ देशप्रेम का रंग भी उस पर गहरा होता चला गया और वह क्रान्तिकारी आन्दोलनों का हिस्सा बन गई। मेरठ से उठने वाली स्वतंत्रता संग्राम की चिंगारी जब सुलगती हुई कानपुर पहुंची तो नृत्य संगीत के व्यवसाय में लिप्त अजीजन बाई भी स्वतंत्रता संग्राम में कूद पड़ी। उसने अपने आभूषण और सौन्दर्य के वस्त्र त्याग कर बहादुर सिपाही का रुप धारण कर लिया। नाना साहब और अंग्रेजों के बीच युद्ध के दौरान उसके दो काम थे पहला, अंग्रेज छावनियों में जाकर नृत्य-संगीत द्वारा उनका मनोरंजन करना और उनकी योजनाओं का पता लगाना और दूसरा, पुरुष वेश धारण कर देशभक्त क्रांतिकारी सैनिकों को समयानुसार सहायता प्रदान करना। उसने 'मस्तानी महिला मंडली' का गठन किया। वह हथियार और हाथ में नंगी तलवारें ले, घोड़े पर सवार हो बिजली की तरह दौड़ते हुए छावनी के बीच चक्कर लगाती रहती थी। घायल सिपाहियों को औषधि, दूध, भोजन आदि पहुंचाती और किले के नीचे लड़ने वालों के पास भोजन व्यवस्था के साथ हथियार आदि पहुंचाती थी। समय आने पर पुरुष वेश धारण कर युद्ध के मैदान में अंग्रेजों से टक्कर लेने में भी वह पीछे नहीं हटी। जब अंग्रेजों ने कानपुर किले पर अधिकार कर लिया तो अजीजन भी अंग्रेजों की कैद में आ गई। अंग्रेज अधिकारी ने उससे क्षमा मांगने को कहा और इसके बदले वो उसके प्राणों की भीख देने के लिए तैयार था, लेकिन अजीजन ने प्रस्ताव ठुकराते हुए कहा, 'अंग्रेजों की पूर्ण हार देखने के अलावा मेरी और कोई इच्छा नहीं है, आप मेरी जान ले सकते हैं, मुझे झुका नहीं सकते।' अंग्रेज अधिकारी ने तुरंत उसे गोली मार देने की आज्ञा दे दी। इतना सुनते ही अजीजन गर्व से सिर ऊंचा कर फायरिंग स्क्वाड के सामने खड़ी हो गई और क्रांति की बलिवेदी पर शहीद हो गई।

सीतापुर, लखनऊ, पटना, आरा, जगदीशपुर, ग्वालियर, आगरा, राजस्थान, महाराष्ट्र , दक्षिण भारत, असम, दमन। भारतवर्ष का कोई भी ऐसा क्षेत्र न था जहाँ इस अग्नि ने अंग्रेज़ों के घमंड को भस्म न किया हो ।

परिणाम

- 1857 का स्वातंत्र्य समर ईस्ट इंडिया कम्पनी द्वारा भारत के अन्यायपूर्ण शोषण और भारतीय समाज तथा स्वधर्म पर उसके अंग्रेज अधिकारियों द्वारा योजनाबद्ध रूप से किए जा रहे सांस्कृतिक आक्रमण के प्रतिकार के लिए किया गया राष्ट्रव्यापी प्रयास था जिसमें देश के हर प्रांत तथा समाज के हर वर्ग ने भाग लिया था।
- विद्रोह के दमन के बहाने अंग्रेजों ने देश भर में भय और आतंक का वातावरण पैदा किया ताकि भविष्य में कोई उनसे टकराने का साहस न कर सके।
- इसके विपरीत भारतीय समाज ने इस घटनाक्रम से यह निष्कर्ष निकालने में कोई चूक नहीं कि अंग्रेजों की अजेयता को चुनौती दी जा सकती है, उन्हें पराजित किया जा सकता है।
- 1857 से पहले तक जहां अंग्रेजों ने राज्य को निगलने की नीति अपनाई हुई थी, क्रांति के पश्चात उन्होंने रियासतों को बनाए रखने की नीति अमल में लाई। अपनी नीतियों के कारण जनता में उपजे असंतोष के अवरोध के रूप में उन्होंने राजाओं और नवाबों का उपयोग किया।
- 1885 में सेफ्टी वॉल्व के रूप में ए. ओ. ह्यूम द्वारा भारतीय राष्ट्रीय कांग्रेस की स्थापना भी इसकी एक कड़ी ही थी।
- लाल-बाल-पाल के प्रवेश के बाद से कांग्रेस का रूप अवश्य बदला ।
- यदि इस संघर्ष को ईस्ट इंडिया कम्पनी की कारगुजारियों के खिलाफ उठे एक तीव्र आक्रोश तक सीमित करते हैं तो इसे संघर्ष की सफलता ही माना जाएगा कि अगस्त 1858 में भारत से ईस्ट इंडिया कम्पनी का शासन समाप्त हो गया और भारत का नियंत्रण प्रत्यक्ष रूप से ब्रिटेन ने अपने हाथ में ले लिया।
- अंग्रेजों को 1857 के स्वांतत्र्य समर ने यह स्वीकार करने पर बाध्य कर दिया कि वे इस देश को पाशविक शक्ति के प्रयोग अथवा धर्मांतरण के द्वारा अपना स्थाई उपनिवेश नहीं बना सकेंगे। "फूट डालो-राज करो" की नीति अंग्रेजों ने 1857 के बाद अपनाई ।

प्रतिसाद

- 1858 में ब्रिटिश साम्राज्ञी विक्टोरिया की घोषणा के बाद भी संघर्ष पूरी तौर पर थमा नहीं था।
- लगभग तीन वर्ष तक प्रत्यक्ष और बाद में परोक्ष रूप में यह संग्राम किसी न किसी तरह जारी रहा। अगले 90 वर्षों तक भारत की स्वतंत्रता के लिए जो संघर्ष चला उस पर 1857 की छाया बनी रही।
- सद्गुरु राम सिंह कूका के नेतृत्व में कूका विद्रोह, जिसमें उन्होंने पंजाब के 22 जिलों में अपना शासन स्थापित कर लिया था, सैकड़ों कूकाओं ने मलेर कोटला के युद्ध में बलिदान दिया तथा 68 कूका विद्रोहियों को सार्वजनिक रूप से तोप के मुँह से बांध कर उड़ाया गया,
- वासुदेव बलवंत फड़के के नेतृत्व में विद्रोह जिसमें उन्होंने पूना के आसपास के अनेक स्थानों को अपने

अधिकार में ले लिया था, द्वारा न्यायालय में दिये वक्तव्य में अपने आप को नाना साहब पेशवा का सेनापति बताना, चापेकर बंधु द्वारा पूना में प्लेग कमिश्नर रैंड की हत्या कर उसके आतंक से मुक्ति तथा लाला हरदयाल द्वारा गदर पार्टी का संचालन, गदर अखबार का प्रकाशन, भारत मुक्ति के यह सभी प्रयास 1857 के स्वातंत्र्य समर के ही अनुवर्तन थे।

- 1907 में 1857 के संग्राम के पचास वर्ष पूरे होने के अवसर पर लंदन के इंडिया हाउस में स्वतंत्रता संग्राम के शहीदों की स्मृति में एक बड़े समारोह का आयोजन किया गया।
- 1857 के स्वातंत्र्य समर के हुतात्माओं को श्रद्धांजलि अर्पित की गयी, शहीदों की जय के नारे लगाए गये, 10 मई के ऐतिहासिक दिन भारतीय विद्यार्थी लंदन के बाजारों में क्रांति के बैज लगाकर घूमे।
- विनायक दामोदर सावरकर ने 24 वर्ष की अल्पायु में ही 1857 के संघर्ष से संबंधित डेढ़ हजार से अधिक मूल दस्तावेजों का अध्ययन कर शोधपूर्ण ग्रंथ 1857 का स्वतंत्र्य समर लिखा जिस पर अंग्रेजों ने प्रकाशन से पूर्व ही प्रतिबंध लगा दिया।
- ब्रिटेन की संसद में पारित गवर्नमेंट ऑफ इंडिया एक्ट 1858 के अनुसार भारत में कम्पनी सरकार का अंत कर भारत प्रत्यक्ष रूप से ब्रिटिश साम्राज्य के अधीन कर लिया गया।
- 1 नवम्बर 1858 को इलाहाबाद में एक भव्य राजदरबार आयोजित कर महारानी विक्टोरिया की ओर से घोषणा की गयी।
- इस घोषणा में समर्पण करने वाले विद्रोहियों को क्षमादान, राजाओं के दत्तक पुत्र के अधिकार की स्वीकृति तथा जनता के धार्मिक अधिकारों में कोई हस्तक्षेप न करने का वचन दिया गया। निस्संदेह इस प्रकार की घोषणा का उद्देश्य भारत की जनता की क्रोधाग्नि को शांत करना ही था।
- इस घोषणा के प्रत्युत्तर में अवध की बेगम हजरत महल की ओर से एक अन्य घोषणा की गयी जिसमें जनता से ब्रिटेन की साम्राज्ञी द्वारा जारी घोषणा पत्र के भुलावे में न आने की अपील करते हुए घोषणा पत्र को बिंदुवार खारिज किया गया था।
- क्रांतिकारियों ने घोषणा पत्र पर विश्वास न करते हुए संघर्ष जारी रखा। 'मृत्यु या विजय' का संकल्प लेकर युद्ध कर रहे इन सेनानियों ने 1859 के अप्रैल माह तक अंग्रेजों के बढ़ते दबाव के बावजूद हथियार न डाले।
- इस तथ्य को सुविधाजनक ढ़ंग से भुलाने की कोशिश की गयी कि इस क्रांति के परिणामस्वरूप वर्ष 1600 में गठित ईस्ट इंडिया कम्पनी, जिसकी अंशधारक स्वयं रानी एलिजाबेथ थीं, की भारत में गतिविधियां रोकने की घोषणा रानी विक्टोरिया द्वारा की गयी।
- ब्रिटिश सरकार के दो प्रमुख उद्देश्य – अफ्रीका और ऑस्ट्रेलिया की भाँति भारत को भी सदैव के लिये अपना उपनिवेश बनाने और ईसाइयत में उसे मतान्तरित करने की संभावना भी इसके साथ ही समाप्त हो गयी।

❖ ❖ ❖

अध्याय 5

क्रांतिकारी, संस्थाएं और आंदोलन

- 1857 के संग्राम को शांत होने में तीन वर्ष लगे।
- 1857 में स्वतंत्रता समर ने सभी पक्षों को गहरा सबक सिखाया। एक ओर अंग्रेज यह समझ चुके थे कि उनकी अजेय होने की छवि समाप्त हो चुकी है इसलिये उन्हें प्रचलित बर्बर तरीकों के विपरीत जनता का विश्वास प्राप्त करने के नये रास्ते खोजने होंगे।
- दूसरी ओर भारतीय नेतृत्व ने भी यह भली प्रकार समझ लिया था कि अंग्रेजों के आक्रमण के अनेक आयाम हैं। केवल राजनैतिक नहीं अपितु समाज जीवन के प्रत्येक मोर्चे पर संघर्ष करना होगा।
- भारतीय नेतृत्व ने यह पहचानने में जरा भी चूक नहीं की कि यह संघर्ष 'स्व' की खोज का है। स्वदेश, स्वभाव, स्वधर्म सब कुछ दांव पर था और आन्दोलन को अंग्रेजों से मुक्ति के स्थान पर 'स्व' के साथ पूरा समाज उठ खड़ा हो तभी यह आन्दोलन यशस्वी होगा। इस लक्ष्य को लेकर अलग-अलग क्षेत्रों के लोगों ने अपने-अपने क्षेत्रों में प्रयास प्रारंभ किये।
- कलकत्ता अंग्रेजों की राजधानी होने के कारण उसका सबसे पहला प्रभाव भी वहीं पड़ा था। बंगाल के समाज सुधारक तथा समाज के नेता राजनारायण बोस ने सोसायटी फॉर 'द प्रमोशन ऑफ नेशनल फीलिंग अमंग एजूकेटेड नेटिव्ज ऑफ बंगाल' का गठन किया। सोसायटी का उद्देश्य पश्चिम के अनुकरण का विरोध, भारतीय योगासन, भारतीय संगीत, चिकित्सा पद्धति, बंगाली भोजन, परिधान तथा शिष्टाचार, भाषा के साथ ही संस्कृत तथा हिन्दू पुरावशेषों की खोज था।
- राज नारायण बोस से प्रेरणा लेकर नबगोपाल गुप्ता ने टैगोर परिवार के सहयोग से हिन्दू मेला का आयोजन प्रारंभ किया जो कलकत्ता में 1867 से 1880 तक अनवरत लगता रहा। मेला बंगाल में 'स्व' के जागरण का माध्यम बना। इसमें स्वदेशी उत्पादों की बिक्री, स्वदेशी कलाओं का प्रदर्शन, काव्य व गीत की प्रस्तुति तथा कुश्ती आदि प्रतियोगिताओं का आयोजन किया जाता था।
- 1883 और 1885 में सुरेन्द्र नाथ बनर्जी के प्रयासों से 'इंडियन नेशनल कांफ्रेंस' का आयोजन हुआ जिसमें देश के सभी प्रमुख केन्द्रों से प्रतिनिधि शामिल हुए।
- सेवानिवृत अंग्रेज अधिकारी ए. ओ. ह्यूम के सहयोग से इसमें देश भर के तत्कालीन बुद्धिजीवियों को जुटाया गया और दिसम्बर 1885 में मुम्बई के गोकुलदास तेजपाल संस्कृत कॉलेज में 'भारतीय राष्ट्रीय कांग्रेस' की स्थापना हुई।
- 1899 में विनायक दामोदर सावरकर और गणेश सावरकर द्वारा नासिक में प्रारंभ 'मित्र मेला' में से ही 'अभिनव भारत' का उदय हुआ।
- अभिनव भारत का गठन सशस्त्र क्रांति द्वारा भारत को अंग्रेजों की दासता से मुक्त कराने के लिये हुआ था। इससे जुड़े अनन्त लक्ष्मण कान्हेरे ने 1909 में नासिक के कलक्टर ए. एम. टी. जैक्सन का वध किया। इसी वर्ष मदनलाल धींगरा ने लंदन में कर्जन वायली की हत्या की। सावरकर को भी जैक्सन हत्याकांड में

आरोपी बनाकर अंडमान भेजा गया था।

- बंगाल में क्रांतिकारी गतिविधियों द्वारा मुक्ति यज्ञ के लिये गठित पहली गुप्त समिति का श्रेय अनुशीलन समिति को जाता है।
- 24 मार्च 1902 को स्थापित अनुशीलन समिति में से ही बाद में अनेक गुप्त समितियों का निर्माण हुआ।
- इनमें से एक 'फ्रेन्ड्स यूनाइटेड क्लब'+ का नाम उल्लेखनीय है जिसका गठन राधिका मोहन राय ने किया। जतीन्द्र नाथ मुकर्जी, उपेन्द्र नाथ बनर्जी, उल्हासकर दत्त, वारीन्द्र घोष, गोपाल दास मजुमदार, सरला देवी चौधरानी, पुलिन विहारी दास जैसे प्रख्यात क्रांतिकारी इस क्लब से जुड़े रहे।

गेंदा लाल दीक्षित और 'मातृवेदी'

गेंदा लाल दीक्षित का जन्म 30 नवम्बर 1890 को बटेश्वर, उत्तर प्रदेश के मई में हुआ था। इनके पिता का नाम पंडित भोला नाथ दीक्षित तथा माता का नाम विचित्रदेवी था। गेंदालाल दीक्षित मातृभूमि को विदेशी शासन तथा अंग्रेजों की दासता से मुक्त कराने के लिए सशस्त्र क्रांति के दुरूह और दुर्गम पथ पर अपने प्राणों का उत्सर्ग करने के लिए उस समय आगे आये जब स्वराज्य और स्वतंत्रता जैसे शब्दों का उच्चारण मात्र ही देशद्रोह का भागी बना देता था। औरैया(इटावा) में डी० ए० वी० स्कूल के प्रधानाचार्य रहते हुए उन्होंने क्रान्तिकारी संगठनों तथा शिवाजी समिति का गठन किया। 'मातृवेदी' के नाम से संगठन का गठन किया। गेंदालाल दीक्षित इस संगठन के कमाण्डर-इन-चीफ रहे, सरदार पंचमसिंह को अध्यक्ष बनाया गया तथा ब्रह्मचारी लक्ष्मणानन्द संगठन कर्ता के रुप में नियुक्त हुए। कुछ ही वर्षों में इस संगठन के अन्तर्गत 500 सवार, 2000 पैदल तथा 8 लाख रुपये से अधिक सम्पति एकत्रित हो गई। चंबल के बागियों को राष्ट्रीयता के रंग में रंगकर तथा देशभक्ति का पाठ पढ़ाकर क्रान्ति के लिये सन्नद्ध किया। शाहजहांपुर के दौरे पर गये तो वहां उनकी भेंट राम प्रसाद बिस्मिल से हुई। प्रान्त के शिक्षित युवकों का गेंदा लाल दीक्षित ने एक संगठन बनाया गया जिसका नाम रखा गया "शिवाजी समिति"। जिसकी शाखायें प्रान्त के 40 जिलों में फैली हुई थीं और 4000 से अधिक सदस्य इन "शिवाजी" समितियों का हिस्सा थे। इसलिए यंग, तत्कालीन आगरा का कलेक्टर, ने उन्हें मैनपुरी प्रकरण में फिर से गिरफ्तार कर लिया वे पुलिस अधिकारी को चकमा देकर जेल से भाग निकले। ब्रिटिश सरकार ने उन पर 3000 रूपए के इनाम की घोषणा की। जेल से लौटकर वे कुछ दिन अपने गांव में रहे 21 दिसम्बर 1919 को क्षय रोग से दिल्ली में उनका शरीरांत हो गया।

- बंगाल में अंग्रेजी नीतियों के चलते पनप रहे और कांग्रेस की छाया में एकत्र हो रहे असंतोष से निपटने के लिये लॉर्ड कर्जन ने बंगाल के विभाजन की योजना बनायी और 1905 में इसे लागू किया। बंगाल में इसका व्यापक स्तर पर विरोध हुआ। विद्यालय और दुकानें बंद कर लोग सड़कों पर उतर आये।
- क्रांतिकारियों ने अपने तरीके से इसका विरोध किया। बंकिमचंद्र का दिया मंत्र 'वंदेमातरम' इस आन्दोलन का घोषनाद बन गया।
- पूरा देश भी 'बंग-भंग' के विरोध में उठ खड़ा हुआ। छः वर्ष लम्बे संघर्ष के बाद 1911 में अंग्रेजों ने विभाजन को निरस्त किया।
- बंग-भंग के विरूद्ध आन्दोलन के बीच ही कुछ निर्भीक युवकों द्वारा सशस्त्र क्रांति के उद्देश्य से मानिकतला

गुप्त समिति के नाम से संगठन की स्थापना की जो आगे 'जुगान्तर' के नाम से प्रसिद्ध हुई।

❖ 1906 में गठित इस गुप्त समिति के प्रमुख सदस्य अरविन्द घोष, वारीन घोष, सूर्यसेन, बाघा जतीन, राजा सुबोध मल्लिक आदि थे। अलीपुर बम काण्ड में इनमें से अनेक सदस्यों को काले पानी की सजा दी गयी।

चटगाँव शस्त्रागार एक्शन: सूर्य सेन उर्फ मास्टर दा 18 अप्रैल, 1930 को चटगांव शस्त्रागार छापे के सर्वोच्च कमांडर थे। चटगांव में दो प्रमुख ब्रिटिश शस्त्रागारों पर कब्जा करने की योजना बनाई गई थी जिसमें लुई बंदूकें और 303 सेना राइफलें थीं और उन हथियारों को उन लोगों को वितरित किया गया था जो सशस्त्र क्रांति कर सकते थे । हालाँकि इस एक्शन प्लान में देशभक्त नौजवान गोला-बारूद खोजने में असमर्थ रहे, फिर भी अंग्रेज़ों की सूचनाओं को बाधित करने हेतु टेलीफोन और टेलीग्राफ प्रणालियों को नष्ट करने में सफल रहे। समूह के सदस्यों को पकड़ने के लिए अंग्रेजों ने बड़े पैमाने पर तलाशी अभियान चलाया। 18 अप्रैल 1930 को चटगांव शस्त्रागार पर छापे के समय पुलिस की गोली से हिमांशु सेन की मृत्यु हो गई। जलालाबाद पहाड़ी पर लड़ाई में नरेश रॉय, त्रिपुरा सेन, बिधु भट्टाचार्जी, हरि गोपाल पाल उर्फ टीगरा, गोपी कानूनगो, प्रभास बल, ससांक सेन, जतिन दास गुप्ता, मधुसूदन दत्ता, पुलिन घोष, अरबिंदु दस्तीदार, अमरेंद्र नंदी की मृत्यु हो गई। चटगाँव शस्त्रागार पर हमले के बाद चटगांव के सैन्य परेड मैदान में ब्रिटिश सेना के साथ आमने-सामने की लड़ाई में नित्यगोपाल भट्टाचार्जी, हिमांशु भट्टाचार्जी, कृष्णा चौधरी, हरेंद्र चक्रवर्ती की मृत्यु हो गई। सूर्य सेन के सहयोगी तारकेश्वर दस्तीदार को 1934 में फाँसी दे दी गई। मास्टर दा सेन को कई दिनों तक क्रूर यातना देने के बाद 12 जनवरी 1934 को चटगाँव जेल में फाँसी दे दी गई। प्रीतिलता वादेदार और कल्पना दत्ता दो महिलाएं थीं जिन्होंने इस समूचे एक्शन प्लान में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई।

❖ जुगान्तर के सदस्यों ने जर्मन में रह रहे भारतीय देशभक्तों की सहायता से हथियारों की खेप भारत मंगायी। इनमें से कुछ क्रांतिकारी उत्तरी अमेरिका भी गये जहां उन्होंने संगठन का प्रारंभिक ढ़ांचा तैयार किया। यही ढ़ांचा बाद में 'गदर पार्टी' की स्थापना का आधार बना।

❖ यह स्व की खोज का ही सर्वस्पर्शी प्रभाव था कि न केवल राजनैतिक चिन्तक, अपितु प्रफुल्ल चंद्र राय, जगदीश चंद्र बोस जैसे वैज्ञानिक, अवनीन्द्र नाथ ठाकुर और नन्दलाल बोस जैसे कलाकार और बड़ी संख्या में कवि, साहित्यकार, पत्रकार तक इस अभियान की सफलता के लिये अपने-अपने तरीकों से योगदान करने लगे।

❖ बंकिम के आनंदमठ ने जहां 'स्व' के इस अभिमत को आध्यात्मिक ऊंचाई दी वहीं स्वामी रामकृष्ण परमहंस, स्वामी विवेकानन्द और भगिनी निवेदिता जैसे सन्यासी भी स्वतंत्रता का अलख जगाते घूमने लगे।

❖ आगा खान के नेतृत्व में मुस्लिम कुलीनों का एक प्रतिनिधि मण्डल अक्तूबर 1906 में गवर्नर जनरल लॉर्ड मिण्टो से मिला और पृथक निर्वाचन की मांग की।

❖ शीघ्र ही यह समूह ढ़ाका के नवाब सलीमुल्लाह द्वारा दिसम्बर 1906 में गठित मुस्लिम लीग से जुड़ गया।

❖ इसी समय गोपाल कृष्ण गोखले भारत सचिव जॉन मॉर्ले से मिलने लंदन गये जहां उन्होंने अन्य ब्रिटिश उपनिवेशों की भांति ही भारत के लिये भी स्वशासन की कांग्रेस की मांग रखी।

❖ 1911 में बंगाल के विभाजन को समाप्त करने के बावजूद अंग्रेजों को कलकत्ता से अपनी राजधानी दिल्ली लानी पड़ी।

- अप्रैल 1916 में बाल गंगाधर तिलक ने और सितम्बर 1916 में श्रीमती एनीबेसेन्ट ने होमरूल लीग की स्थापना की।
- गोपाल कृष्ण गोखले की 'सर्वेन्ट्स ऑफ इंडिया सोसायटी' भी इसमें जुड़ गयी। आस्ट्रेलिया, न्यूजीलैंड, कनाडा और दक्षिण अफ्रीका जैसे उपनिवेशों के समान ही भारत को स्वशासन की मांग के इस अभियान में पं. मोतीलाल नेहरु, भूलाभाई देसाई, चितरंजन दास, मदनमोहन मालवीय, मुहम्मद अली जिन्ना, तेज बहादुर सप्रू और लाला लाजपत राय भी शामिल हो गये।
- तिलक को इस आन्दोलन के दौरान ही लोकमान्य के नाम से सम्बोधित किया गया।
- अंग्रेज सरकार ने लोकमान्य तिलक के दिल्ली व पंजाब में प्रवेश पर प्रतिबंध लगा दिया और श्रीमती एनीबेसेंट को गिरफ्तार कर लिया।
- इसका व्यापक विरोध हुआ और सर सुब्रमण्यम अय्यर ने अंग्रेजों द्वारा दी गयी 'नाइटहुड' की उपाधि का त्याग कर दिया।
- 1917 के अगस्त में ब्रिटिश सरकार ने भारत के लिये स्वशासन को दीर्घकालीन लक्ष्य घोषित किया।
- ठीक इसी समय मोहनदास करमचंद गांधी दक्षिण अफ्रीका से भारत वापस आये थे।
- होमरूल लीग के आन्दोलन के फलस्वरूप उत्पन्न राष्ट्रीय जागरण गांधी जी के आगामी आन्दोलन की आधारभूमि बना।
- अंततः 1920 में होमरूल लीग का विलय कांग्रेस में हो गया। इसी वर्ष लोकमान्य तिलक की मृत्यु भी हुई।
- बिहार के एक व्यक्ति राजकुमार शुक्ला ने गांधी जी से चम्पारण के किसानों की समस्याओं पर ध्यान देने का निवेदन किया। यहां यूरोपियन व्यापारी किसानों को नील की खेती के लिये विवश करते और मनमानी कीमत पर उत्पाद खरीदते थे।
- गांधी जी डॉ. राजेन्द्र प्रसाद, मजहरुल हक, महादेव देसाई, नरहरि पारेख, जे. बी. कृपलानी के साथ चम्पारण पहुंचे जहां प्रशासन ने उन्हें प्रवेश करने से रोक दिया। गांधी जी ने पहली बार यहां सत्याग्रह के अस्त्र का प्रयोग किया और सफलता पायी।
- हिन्दुस्तान सोशलिस्ट रिपब्लिकन आर्मी : सशस्त्र क्रांति के माध्यम से भारत को स्वतंत्र कराने का लक्ष्य लेकर इस संगठन का निर्माण रामप्रसाद बिस्मिल और उनके साथियों ने 1923 में किया था।
- हिन्दुस्तान रिपब्लिकन आर्मी ने इलाहाबाद, आगरा, कानपुर, वाराणसी, लखनऊ, शाहजहांपुर और सहारनपुर में अपने केन्द्र बनाये। उनके कलकत्ता और देवघर के केन्द्रों पर बम बनाने का भी काम होता था।
- संगठन के एक सदस्य शचीन्द्रनाथ सान्याल ने 'रिवॉल्यूशनरी' नाम से संगठन का एक घोषणापत्र भी तैयार किया था। इसमें देश के युवाओं से स्वतंत्रता संघर्ष के लिये दल में शामिल होने की अपील की गयी थी।
- अनुशीलन समितिः बंगाल के मिदनापुर में 24 मार्च 1902 को अनुशीलन समिति की स्थापना हुई। समिति के विचारों को लोक तक पहुंचाने के लिये 'युगान्तर' नामक पत्रिका का प्रकाशन किया गया ।
- महर्षि अरविन्द के भाई वारीन्द्र घोष और स्वामी विवेकानन्द के भाई भूपेन्द्रनाथ दत्त के नेतृत्व में बांग्ला युवकों का एक बड़ा संगठन खड़ा हो गया। कहा जाता है कि इसकी 500 से अधिक शाखाऐं हो गयी थीं।
- युगान्तर के माध्यम से वे युवाओं में जोश भर रहे थे और अंग्रेजों को चुनौती भी दे रहे थे।
- मुजफ्फरपुर के न्यायधीश किंग्सफोर्ड का वध करने के प्रयास में दो महिलायें मारी गयी। इसमें अनुशीलन

मुजफ्फरपुर के वीर खुदीराम बोस और प्रफुल्ल चाकी 30 अप्रैल 1908 को, खुदीराम बोस और प्रफुल्ल चाकी ने गोरे मजिस्ट्रेट किंग्सफोर्ड की हत्या की ज़िम्मेदारी अपने ऊपर ली। उसकी बग्घी पर यह समझकर बम फेंका कि किंग्सफोर्ड बग्घी के अंदर ही मारा जाये। पर इस प्रयास में बग्घी के अंदर बैठी अंग्रेजी महिलाएं मारी गयीं। इस घटना से दहले अंग्रेज़ों ने 33 जुगांतर कार्यकर्ताओं को गिरफ्तार किया। अंग्रेज़ों के हाथ आने से पहले मोकामाघाट स्टेशन पर प्रफुल्ल चाकी ने रिवॉल्वर से अपने प्राण ले लिए। खुदीराम बोस भी वीरगति को प्राप्त हुए, 11 अगस्त 1908 को उनको मुजफ्फरपुर जेल में फाँसी दे दी गई।

समिति से जुड़े हुए 18 वर्षीय खुदीराम बोस को फांसी दी गयी। खुदीराम बोस इस बलिदान के बाद बंगाल के युवाओं के प्रेरणास्रोत बनकर उभरे। उनके चित्र और उनका नाम लिखी धोतियां युवाओं में अत्यंत लोकप्रिय थीं।

- अनुशीलन समिति की गतिविधियों की व्यापकता का अनुमान इसी से लगाया जा सकता है कि उसके सदस्यों द्वारा 64 अंग्रेजों और 454 उनके सहयोगियों, मुखबिरों अथवा क्रांतिकारियों के विरूद्ध गवाहों को मौत के घाट उतारा गया।

पंजाब में क्रांतिकारी गतिविधियां

- सरदार भगत सिंह के चाचा सरदार अजीत सिंह आर्यसमाज से जुड़े थे। उन्होंने मुहब्बताने-वतन नामक संगठन बनाकर गतिविधियां प्रारंभ की।
- भारत माता सोसायटी का गठन कर सूफी अंबा प्रसाद भी स्वतंत्रता का शंखनाद कर रहे थे।
- मास्टर अमीरचन्द्र ने रास बिहारी बोस के साथ मिलकर क्रांतिकारी आन्दोलन की कमान संभाली। इन्हीं की योजना से 23 दिसम्बर 1912 को वायसराय लॉर्ड हार्डिंग्स का वध करने की योजना बनायी गयी।
- दिल्ली के चांदनी चौक में उस पर बम फेंका गया किन्तु वह बाल-बाल बच गया। इस अभियोग में मास्टर अमीर चन्द्र, अवध विहारी, भाई बाल मुकुन्द और वसन्त विश्वास को फांसी हुई।
- रासबिहारी बच निकले और जापान पहुंच कर उन्होंने आजाद हिन्द फौज की गतिविधियों को संभाला।
- लाला हरदयाल भी यूरोप चले गये और उन्होंने विदेशों में रहते हुए भारतीय स्वतंत्रता आन्दोलन को सहयोग किया।
- गदर पार्टी का गठन उनके ही प्रयासों से हुआ।
- भगत सिंह, सुखदेव, करतार सिंह सराबा, ऊधमसिंह, मदनलाल धींगरा आदि सैकड़ों क्रांतिकारियों की श्रंखला पंजाब से उत्पन्न हुई।

दक्षिण भारत में क्रांतिकारी गतिविधियां

- दक्षिण भारत पहले से ही यूरोपीय साम्राज्यवादी शक्तियों की बर्बरता का सामना कर रहा था। दक्षिण में

सैन्य प्रतिकार ही प्रमुख रूप से सामने आया।

- ❖ नरसिंहरेड्डी ने 5000 युवाओं को एकत्रकर एक क्रांतिकारी सेना का निर्माण किया।
- ❖ बेल्लारी, कुर्नूल और कड़प्पा में तीन माह तक अंग्रेजों को छकाने के बाद नरसिंहरेड्डी अंग्रेजों की गिरफ्त में आ गये। उन्हें फांसी दे दी गयी।
- ❖ लंदन में वीर सावरकर के साथ रहे वी. वी. एस. अय्यर ने भी दक्षिण भारत में क्रांति की मशाल को जलाये रखा।
- ❖ 1910 में गठित विप्लवी समिति के द्वारा अनेक क्रांतिकारी घटनाओं को अंजाम दिया गया। इसी समिति से जुड़े क्रांतिकारी वंचीअय्यर और शंकर कृष्ण ने जिला मजिस्ट्रेट की हत्या की।
- ❖ बंगाल और महाराष्ट्र जब अंग्रेजी शासन के लिये काल साबित हो रहे थे, तो उन्हें दक्षिण भारत तुलना में शांत लगने लगा था लेकिन शीघ्र ही उनका यह भ्रम दूर हो गया। 1910 के प्रारंभ में तूतीकोरिन में 'भारतमाता ऐसोसिएशन का गठन हुआ और सशस्त्र क्रांति की तैयारियां शुरू हो गयीं।
- ❖ तेनकाली, शेनकोराह, पूनालूर, ओट्टापदाराम आदि अनेक स्थानों पर उनकी शाखाऐं प्रारंभ हो गयी। डिप्टी इंस्पेक्टर जनरल ऐश को पत्र लिखकर चेतावनी दी गयी। तमिल में छपा एक पत्रक डाक से हजारों की संख्या में नागरिकों तक भेजा गया जिसमें 'अभिनव भारत समाज'नामक गुप्त समिति के सदस्य बनने तथा अंग्रेजों की हत्या कर भारत को मुक्त कराने का आग्रह किया गया।
- ❖ 17 जून 1911 को वांचीनाथन अय्यर ने मनयांची स्टेशन पर ऐश की हत्या कर दी और स्वयं को गोली मार कर आत्मोत्सर्ग कर दिया।
- ❖ मद्रास और बंगाल अंग्रेजों के महत्वपूर्ण केन्द्र थे और कोलकाता राजधानी। किन्तु बंगाल और दक्षिण भारत, दोनो ही में उनको निरंतर सशस्त्र चुनौती मिल रही थी जिससे निपटने में उनकी सारी शक्ति लग रही थी।

विदेशों में क्रांतिकारी गतिविधियां

- ❖ प्रवासी भारतीयों को चार श्रेणियों में रखा जा सकता है।
- ❖ पहली श्रेणी में वे प्रवासी हैं जिन्हें अंग्रेज श्रमिक के रूप में अपने अन्य उपनिवेशों में ले गये। वास्तव में वे एक प्रकार के गुलाम अथवा बंधक मजदूर थे, जिन्हें सामान्य तौर पर गिरमिटिया के रूप में संबोधित किया जाता रहा। दक्षिण अफ्रीका, वेस्ट इंडीज, मारीशस आदि देशों में इनकी बड़ी संख्या है।
- ❖ दूसरी श्रेणी उन उदारमना भारतीय प्रवासियों की है जिन्होंने स्वतंत्रता के कार्य को आगे बढ़ाने के लिये आर्थिक सहायता की। श्यामजी कृष्ण वर्मा इसके उदाहरण है जिन्होंने लंदन में इंडिया हाउस को स्थापित किया।
- ❖ तीसरी श्रेणी उन युवाओं की है जो उच्च शिक्षा के लिये विदेश गये और वहां से अपना जीवन मातृभूमि के चरणों में समर्पित करने का संकल्प लेकर लौटे। महर्षि अरविन्द इसका प्रतिनिधि उदाहरण हैं।
- ❖ चौथी श्रेणी उन क्रांतिकारियों की है जिन्होंने विदेशों में रहकर उच्च शिक्षा प्राप्त करने की व्यवस्था का भी अपने आन्दोलन के लिये उपयोग किया। विनायक दामोदर सावरकर का नाम उदाहरणस्वरूप लिया जा सकता है।

- रासबिहारी बोस, मैडम भीकाजी कामा, आजाद हिन्द सरकार के पहले प्रधानमंत्री मौलाना मुहम्मद बरकतुल्लाह, तमिल क्रांतिकारी बेंकटेश सुब्रमण्यम अय्यर, मदनलाल ढींगरा, चम्पक रमन पिल्लई, राजा महेन्द्र प्रताप, जिन्होंने भारत की पहली स्वतंत्र सरकार की स्थापना की, मानवेन्द्र नाथ राय, ऋषिकेश लाटा और सरदार करतार सिंह आदि के नाम इस दृष्टि से उल्लेखनीय हैं।
- 24 जनवरी 1905 को स्थापित इंडिया होमरूल सोसायटी के अध्यक्ष श्यामजी कृष्ण वर्मा बने।
- पेरिस निवासी भारतीय मूल के व्यापारी एम. ए. राणा द्वारा दिये गये आर्थिक सहयोग से श्यामजी कृष्ण वर्मा ने लंदन में इंडिया हाउस का निर्माण कराया।
- उन्होंने इंडियन सोशियोलॉजिस्ट नामक पत्रिका का प्रकाशन और भारतीय विद्यार्थियों के लिये छात्रवृत्ति योजना प्रारंभ की। छात्रवृत्ति पाकर ही अनेक प्रसिद्ध क्रांतिकारी लंदन गये। लंदन में राष्ट्रीय गतिविधियों के केन्द्र के रूप में इंडिया हाउस प्रसिद्ध हो गया।
- 1857 के स्वतंत्रता समर की स्मृति में 10 मई 1905 को एक बड़ा आयोजन किया गया
- ब्रिटिश सरकार के रिकार्ड का उपयोग कर सावरकर ने 1857 का स्वतंत्र्य समर नामक ग्रंथ लिखा जिसे 1857 के 50 वर्ष पूरे होने के अवसर पर 10 मई 1908 को प्रकाशित किया गया।
- सावरकर की गिरफ्तारी के बाद क्रांतिकारी गतिविधियों का केन्द्र पेरिस बन गया जहां पहले से श्यामजी कृष्ण वर्मा मौजूद थे।
- उनके अतिरिक्त सरदार सिंह, रेवाभाई राना और मैडम भीखाजी रूस्तम जी कामा भी पेरिस में रहकर भारत की स्वतंत्रता के लिये काम कर रहे थे।
- मैडम कामा ने जनवरी 1907 में जर्मनी में सम्पन्न इंटरनेशनल सोशलिस्ट कांग्रेस में भाग लिया जहां पहली बार यूनियन जैक के स्थान पर भारतीय ध्वज फहराया गया।
- इस ध्वज की संकल्पना स्वयं सावरकर ने की थी जिसमें लाल, सफेद व वासंती, तीन पट्टियां थी। लाल पट्टी पर कमल का फूल और सात तारे बने थे जिन्हें सप्तर्षि के प्रतीक के रूप में बनाया गया था। बीच की सफेद पट्टी पर 'वन्देमातरम' लिखा था वहीं नीचे की वासंती पट्टी पर सूर्य व चन्द्र अंकित थे।
- अमेरिका में 24 जनवरी 1906 को मुहम्मद बरकतुल्ला ने 'सर्व आर्य संघ' की स्थापना की। बाद में इसका नाम बदलकर 'सोसायटीफॉर द एडवान्समेन्ट ऑफ इंडिया' कर दिया गया।
- बैंकूवर से 'फ्री हिन्दुस्तान' नामक समाचार 1908 में प्रारंभ हुआ तो 'सर्कुलर- ए- आजादी' अखबार उर्दू में शुरु हुआ।
- के. सी. दास, तारकनाथ दास और अधर चन्द्र लश्कर ने कैलीफोर्निया में 'भारतीय स्वाधीनता संघ' नामक संस्था स्थापित की।
- अमेरिका में ही 1913 में 'हिन्द एसोसियेशन ऑफ अमेरिका' की स्थापना हुई। इसकी स्थापना सोहन सिंह भाकना ने की थी।
- यहां से प्रकाशित 'हिन्दुस्तान गदर' नामक अखबार ब्रिटिश भारत की बर्बरता, आर्थिक लूट और मतान्तरण के कच्चे चिट्ठे प्रकाशित कर रहा था। इसके एक अंक में प्रकाशित किया गया कि 1857 में संघर्ष को बीते 56 साल हो गये हैं और अब समय आ गया है कि एक नये विद्रोह की रचना बने।
- इसी वर्ष स्टेनफोर्ड विश्वविद्यालय में प्राध्यापक रहे लाला हरदयाल ने पं. काशीराम, भाई परमानन्द और करतार

सिंह सराबा को साथ लेकर गदर पार्टी की स्थापना की। इसकी 62 शाखाऐं खुली जिनमें 5 हजार से भी अधिक सदस्य थे।

- सरदार अजीत सिंह, सूफी अम्बा प्रसाद, राजा महेन्द्र प्रताप, बरकतुल्ला, चम्पक रमण पिल्लई, वीरेन्द्र नाथ चट्टोपाध्याय, रास बिहारी बोस, शचीन्द्रनाथ सान्याल आदि के प्रयत्नों से एक व्यापक योजना तैयार हुई।
- क्रान्ति के लिये 21 फरवरी 1915 का दिन नियत किया गया था किन्तु अंग्रेजों को पहले ही इस योजना की भनक लग गयी। लाहौर षड्यंत्र केस के नाम से इन क्रांतिकारियों पर मुकदमा चलाया गया। 42 को फाँसी और 200 से अधिक को लम्बी सजाएं दी गयीं।
- शिकागो के विश्व धर्म सम्मेलन में स्वामी विवेकानंद के व्याख्यान ने उन्हें भारतीय युवाओं के बीच एक नायक के रूप में स्थापित किया। स्वामी जी के अग्नि मंत्रों ने देश को आत्मगौरव से भर दिया और स्वतंत्रता की आकांक्षा को तीव्र कर दिया। उन्होंने राष्ट्रीय नेतृत्व की अगली पीढ़ी के लिये एक अनुकूल वातावरण उत्पन्न कर दिया।
- स्वामी जी ने भारत की पराधीनता का कारण आत्मविस्मृति तथा पश्चिम का अन्धानुकरण बताया। उन्होंने शक्ति की साधना का आह्वान करते हुए कुछ वर्षों के लिये सभी देवी- देवताओं को छोड़कर, केवल भारत माता की उपासना करने के लिये प्रेरित किया।
- स्वामी विवेकानद ने जिस आध्यात्मिक धारा को प्रवाहित किया उसे स्वाधीनता आन्दोलन में बदलने का कार्य किया लाला लाजपत राय, बाल गंगाधर तिलक, विपिन चंद्र पाल और अरविन्द घोष ने।
- आध्यात्मिक प्रवाह को राजनैतिक चेतना में बदलने का सफल उपक्रम किया बाल गंगाधर तिलक ने।
- तिलक का संबंध स्वामी दयानन्द से भी रहा और स्वामी विवेकानन्द से भी। उन्होंने महाराष्ट्र में 'गणेशोत्सव' और 'शिवाजी उत्सव' के सार्वजनिक आयोजन प्रारंभ किये। आगे चलकर यह उत्सव न केवल बंगाल बल्कि पूरे भारत और फिलीपींस और जापान तक मनाये जाने लगे।
- तिलक 1881 से ही अंग्रेजी में 'मराठा' तथा मराठी में 'केसरी' का प्रकाशन कर रहे थे। उनके संपादकीय लोगों में राष्ट्रीय भावना जगाने वाले तथा अंग्रेजों की नीतियों की कटु आलोचना से भरे होते थे। 1895-96 में अकाल और प्लेग के समय अंग्रेजों की दमनकारी नीतियों के विरुद्ध यह समाचार पत्र जनता के प्रतिनिधि के रूप में मैदान में थे।
- प्लेग कमिश्नर रैण्ड के आदेश पर ब्रिटिश सिपाही लोगों से अभद्रता करते, स्वस्थ लोगों को भी प्लेग के रोगियों के साथ बंद कर देते, महिलाओं को प्लेग की जांच के नाम पर वस्त्र उतारने के लिये विवश करते। इन घटनाओं से क्षुब्ध होकर चापेकर बंधुओं ने प्लेग कमिश्नर रैण्ड का वध कर दिया।
- सरकार ने इस घटना को केसरी में तिलक द्वारा लिखे गये एक संपादकीय से जोड़ा और राजद्रोह का मुकदमा चलाकर उन्हें डेढ़ वर्ष की सजा सुना दी।
- 1907 में कांग्रेस की फूट के बाद उन्हें एक बार पुनः गिरफ्तार कर छः वर्षों के लिये बर्मा स्थित माण्डले जेल भेज दिया। 1914 में जेल से छूटते ही वे पुनः राष्ट्रीय जागरण के कार्य में लग गये। प्रथम विश्वयुद्ध के जब सभी नेता अंग्रेजों का समर्थन कर रहे थे, तिलक जी ने स्व शासन की मांग करते हुए अंग्रेजों के विरुद्ध जनान्दोलन किया।
- अपने प्रिय जननेता को समाज ने 'लोकमान्य' नाम से सम्बोधित किया। 1 अगस्त 1920 को उनका देहावसान हो गया।

- लोकमान्य तिलक के प्रखर राष्ट्रवाद को उत्तर भारत में साथ मिला लाला लाजपत राय का। युवाओं में अनुशासन व सेवा भाव जाग्रत करने के लिये उन्होंने 'लोक सेवक मण्डल' तथा मजदूरों की समस्याओं के निवारण के लिये 'अखिल भारतीय ट्रेड यूनियन कांग्रेस' की स्थापना की।
- अक्तूबर 1928 में लाला लाजपत राय के नेतृत्व में हजारों युवकों ने साइमन कमीशन का विरोध किया। पुलिस की लाठियों से घायल होकर लालाजी ने सिंहगर्जना की- 'मुझ पर पड़ने वाली लाठी की एक-एक चोट ब्रिटिश साम्राज्य के कफन में एक-एक कील साबित होगी।' 17 नवंबर 1928 को उन्होंने देह त्याग दी।
- सरदार भगत सिंह और उनके साथियों ने साँडर्स का वध करके उनकी मृत्यु का बदला लिया।
- तिलक और लाजपत राय की प्रखर राष्ट्रीयता को साहित्यिक-सांस्कृतिक आधार गुरुदेव रवीन्द्रनाथ टैगोर ने दिया। उन्होंने जलियांवाला हत्याकांड के विरुद्ध अंग्रेजों द्वारा दी गयी 'सर' की उपाधि त्याग दी।
- महात्मा गांधी ने दक्षिण अफ्रीका में वकालत करते हुए सत्याग्रह का अस्त्र खोजा। भारत में आकर उन्होंने इसका सफल प्रयोग किया और कांग्रेस की सीमित गतिविधियों को जन आन्दोलन में बदल दिया। राजकुमार शुक्ला के निमंत्रण पर चम्पारन पहुंच कर गांधीजी को वास्तविक भारत के दर्शन हुए। वहां की कठिनाइयों को देख उन्होंने भी विदेशी वस्त्रों को त्याग कर सामान्य भारतीयों की तरह रहने का व्रत लिया और जीवन भर उसे निभाया। स्वदेशी का मंत्र तो उनके जन्म के पूर्व से भारत में गूंज रहा था किन्तु उसे चरखे से जोड़कर उन्होंने स्वावलम्बन का आधार बनाया। उनके आह्वान पर युवाओं ने स्कूलों का बहिष्कार किया तो नागरिकों ने सरकारी नौकरियों को ठुकराया। लोकमान्य तिलक के पश्चात भारत की स्वतंत्रता तक वे देश के राजनैतिक क्षितिज पर छाये रहे।
- 'हिन्द स्वराज' में उन्होंने भारत और भारतीय समाज के विषय में जो चिंतन प्रकट किया उसे जिया भी। उनसे प्रेरणा लेकर करोड़ों लोगों ने स्वदेशी का व्रत लिया।
- कर्जन ने बिना किसी विचार-विमर्श के और जनमत को जाने फरवरी 1905 में 'बंग-भंग' का प्रस्ताव ब्रिटेन भेजा जिस पर जून में भारत मंत्री ने अपनी मुहर लगा दी। इससे पूर्व 12 दिसम्बर 1903 के गजेटियर में इसका उल्लेख आ चुका था। पूरे देश में इस पर तीखी प्रतिक्रिया हुई।
- 14 अप्रैल 1906 को बंगाल के बारीसाल में हुए सविनय प्रतिरोध ने एक नया इतिहास लिखा। निहत्थे नागरिक पुलिस की बर्बरता के सामने बिना धैर्य खोये वन्देमातरम के नारे लगाते रहे। अहिंसक प्रतिरोध का यह प्रयोग ही आगे चलकर महात्मा गांधी का प्रमुख अस्त्र बना।
- वासुदेव बलबंत फड़के, बिरसा मुंडा और कूकाओं के सामूहिक संघर्ष का अगला चरण रणनीतिक क्रांतिकारी आन्दोलन का था। इसका पहला श्रेय जाता है पूना के चापेकर बंधुओं को।
- 22 जून 1897 को महारानी विक्टोरिया के राज्यारोहण की जयन्ती के समारोह से निकल रहे प्लेग कमिश्नर रैण्ड तथा लेफ्टिनेंट एमर्स्ट की हत्या चापेकर बंधुओं ने कर दी। एक स्थानीय व्यक्ति की मुखबिरी पर दामोदर चापेकर को गिरफ्तार कर लिया और 18 अप्रैल 1898 को फांसी दे दी गयी।
- विनायक दामोदर सावरकर के बड़े भाई गणेश दामोदर सावरकर को देशभक्तिपूर्ण कविताऐं लिखने के आरोप में कालापानी भेज दिया गया। अभिनव भारत के सदस्यों ने सजा सुनाने वाले जज जैक्सन का वध कर दिया। परिणामस्वरूप अनन्त कान्हरे, कृष्णजी गोपाल कर्वे और विनायक देश पांडे को 19 अप्रैल 1910 को फांसी दे दी गयी।
- 1911 के दिल्ली दरबार में दिल्ली को भारत की राजधानी बनाने की घोषणा की गयी।
- प्रमुख क्रांतिकारी नेता यतीन्द्र नाथ मुखोपाध्याय जिन्हें लोग स्नेह से बाघाजतीन कह कर पुकारते थे, ने उड़ीसा

के बालासोर जिले में काप्तीपोदा नामक गांव में अपना अड्डा बनाया।

- ❖ उनके साथ चित्तप्रिय, निरेन्द्र, मनोरंजन तथा ज्योतिष चंद्र पाल आदि थे।
- ❖ 10 सितम्बर 1915 को पुलिस मुठभेड़ में जतिन ने प्राण त्याग दिये।
- ❖ ज्योतिष चंद्र पाल, निरेन्द्र दासगुप्त और मनोरंजन सेनगुप्त पर मुकदमा चला जिसमें ज्योतिष को 14 वर्ष के लिये कालापानी निर्वासन का दण्ड मिला। शेष दोनों को 22 नवम्बर 1915 को बालासोर जेल में फांसी दे दी गयी।
- ❖ रॉलेट की रिपोर्ट के विरुद्ध 30 मार्च 1919 को दिल्ली में हड़ताल हुई और जलूस निकला। दिल्ली रेलवे स्टेशन पर प्रदर्शनकारियों पर पुलिस की गोली से पांच लोग मरे और बीस घायल हुए।
- ❖ 11 अप्रैल को गांधी जी ने मुंबई में विशाल जन समूह को संबोधित किया। विरोध प्रदर्शनों का दौर पूरे देश में प्रारंभ हो गया। जगह-जगह पुलिस ने क्रूर दमन किया। गोलियां चलायीं जिनमें निहत्थे नागरिक मारे गये।
- ❖ प्रथम विश्वयुद्ध में जब ब्रिटिश युद्ध में उलझे थे, और आन्तरिक मोर्चे पर पंजाब से बंगाल तक क्रांतिकारी घटनाओं की बाढ़ आयी हुई थी, ऐसे में भारत मंत्री मांटेग्यू ने 20 अगस्त 1917 को धीरे-धीरे उत्तरदायी सरकार की स्थापना की बात कही थी।
- ❖ 1918 में प्रथम विश्वयुद्ध समाप्त होने के बाद कांग्रेस को उम्मीद थी कि उनकी मांग पूरी होगी और देश एक कदम स्वशासन की ओर बढ़ेगा। किन्तु हुआ इसके विपरीत।
- ❖ युद्ध की समाप्ति के बाद मिला रॉलेट एक्ट जो पहले प्राप्त अधिकारों में भी कटौती करता था और उसके मौखिक विरोध की प्रतिक्रिया में जलियांवाला बाग का बर्बर हत्याकांड सामने आया।
- ❖ जलियांवाला बाग में जनरल डायर के आदेश पर 50 गोरे और 100 अन्य सैनिकों ने 1600 से अधिक गोलियां चलाई, जिसमें 400 लोग मरे और दो हजार घायल हुए। नृशंसता की हद यह थी कि घायलों को न तो अस्पताल ले जाया गया और न ही उनके लिये किसी प्रकार की सहायता ही उपलब्ध करायी गयी। इसके विपरीत शहर की बिजली और पानी की सप्लाई भी बंद कर दी गयी। रात 8 बजे अमृतसर में कर्फ्यू लगा दिया गया। पंजाब के अधिकांश हिस्सों में मार्शल लॉ लगाया गया जो 25 अगस्त को हटा।
- ❖ नवम्बर 1919 में पंजाब में खलीफात कमेटी की स्थापना की गयी। कांग्रेस ने खलीफात आन्दोलन में बढ़-चढ़कर हिस्सा लिया। खलीफा को बनाये रखना तो संभव नहीं हुआ किन्तु यह परिणाम अवश्य हुआ कि मुस्लिम समाज के एक वर्ग ने राष्ट्रीय जीवन में समरस होने के स्थान पर अपनी अलग पहचान के लिये आग्रह बढ़ा दिया। आगे चलकर यही द्वि-राष्ट्रवाद के सिद्धांत का आधार बना।
- ❖ 1919 के अमृतसर अधिवेशन, 4 सितम्बर 1920 के कलकत्ता के विशेष अधिवेशन में कांग्रेस ने खलीफात आंदोलन को अपना समर्थन दिया। इसी अधिवेशन में कांग्रेस का लक्ष्य ब्रिटिश साम्राज्य के अंतर्गत 'स्वशासन' के स्थान पर 'स्वराज्य'की शब्दावली का प्रयोग हुआ।
- ❖ मुहम्मद अली जिन्ना, श्रीमती एनीबेसेन्ट और विपिन चन्द्र पाल ने आन्दोलन से असहमति जताते हुए कांग्रेस छोड़ दी।
- ❖ 1 अगस्त 1920 को असहयोग आन्दोलन औपचारिक रूप से प्रारंभ हुआ।
- ❖ फरवरी 1921 में ड्यूक ऑफ कनॉट तथा नवम्बर 1921 में प्रिन्स ऑफ वेल्स के भारत आगमन पर उनका बहिष्कार किया गया। विदेशी वस्त्रों की होली जलायी गयी। चरखे के प्रयोग का आह्वान किया गया। 'तिलक स्वराज फण्ड' की स्थापना की गयी।

अल्लुरी सीताराम राजू: मान्यम वीरुडु

अल्लूरी सीताराम राजू भारत माता के महान सपूतों में से एक थे। उन्होंने भारत माता की बेड़ियों को तोड़ने के लिए अपने प्राण तक न्यौछावर कर दिए। राम राजू की अद्भुत वीरता आज भी तेलुगु क्षेत्र के लोगों के लिए प्रेरणा का स्रोत है। यद्यपि अंग्रेजों के साथ उनकी लड़ाई केवल दो वर्षों तक ही चली, लेकिन फिर भी उन्होंने भारतीय स्वतंत्रता संग्राम के इतिहास में और प्रत्येक देशवासी के दिल में अपनी एक अमिट छाप छोड़ी है। अंग्रेजों के विरुद्ध इस संघर्ष को जीतने के लिए उन्होंने आदिवासियों से युद्ध कौशल के तरीके सीखे और कुछ अपनी स्वयं की रणनीतियाँ बनाईं। दमनकारी मद्रास वन अधिनियम, 1882 के विरुद्ध आवाज उठाने के लिए उन्हें तैयार किया। उन्होंने सोचा कि सबसे अच्छा तरीका है कि दुश्मन से हथियारों को छीन लिया जाए। उन्होंने पूरी शक्ति और जोश के साथ पुलिस स्टेशनों पर आक्रमण करना प्रारम्भ कर दिया। इस तरह का पहला आक्रमण उन्होंने 22 अगस्त, 1922 को विशाखापट्टनम एजेंसी क्षेत्र के चिंतापल्ली पुलिस स्टेशन पर किया, जिसमें राजू के नेतृत्व में 300 से अधिक क्रांतिकारियों ने भाग लिया। । 24 सितंबर, 1922 को क्रांतिकारियों के साथ लड़ाई में दो अधिकारी - स्कॉट और हेटर मारे गए और अनेक सैनिक घायल हो गए। ब्रिटिश सेना लगातार रामा राजू के पीछे लगी रही और अंततः उन्होंने सीताराम राजू को गिरफ्तार कर 7 मई, 1924 को मृत्युदण्ड दे दिया। इसके बाद अकथनीय दमन और हिंसा हुई जो उनकी मृत्यु के कुछ सप्ताह बाद तक जारी रही, इसमें राजू के कई अनुयायियों की हत्या हुई ।

- गांधी जी ने एक करोड़ सदस्य,एक करोड़ रुपये का लक्ष्य दिया और कहा कि यदि यह पूर्ण हो जाय तो 31 दिसम्बर की आधी रात तक स्वराज्य मिल जायेगा। गांधी जी के आह्वान को जबरदस्त प्रतिसाद मिला। 1 करोड़ का लक्ष्य पार हो गया। पूरे देश में सत्याग्रह और विरोध प्रदर्शनों की बाढ़ आ गयी।
- तभी एक अप्रिय घटना घटी। पुलिस की बर्बरता से क्षुब्ध प्रदर्शनकारियों ने 4 फरवरी 1922 को उत्तर प्रदेश के गोरखपुर जिले के चौरी-चौरा नामक स्थान पर एक पुलिस चौकी को घेर कर आग लगा दी, जिसमें 1 थानेदार और 22 सिपाही जीवित जल गये।
- गांधी जी ने हिंसा की आलोचना करते हुए आन्दोलन को स्थगित करने की घोषणा कर दी। निर्णायक मोड़ पर पहुंच रहे इस आन्दोलन को स्थगित करने के निर्णय से देश स्तब्ध रह गया। लाला लाजपत राय, पं. मोतीलाल नेहरू, सुभाष चन्द्र बोस, जवाहर लाल नेहरू आदि नेता भी इस निर्णय से आश्चर्यचकित रह गये।
- आन्दोलन कांग्रेस ने स्वयं वापस ले लिया इसलिये इसके उद्देश्य पूरे होने का तो सवाल ही नहीं था। 'एक वर्ष में स्वराज्य'का विचार भी बेमौत मर गया।
- हिन्दू-मुस्लिम एकता की जो संभावना बनी भी उसे मालाबार के मोपला दंगे ने पूरी तरह समाप्त कर दिया।
- कांग्रेस के दो दिग्गज नेताओं मोतीलाल नेहरू और चितरंजन दास ने स्वराज्य पार्टी का गठन कर लिया।
- तिलक की विरासत को आगे बढ़ाने वाले जी.एस. खापर्डे और डॉ. हेडगेवार ने कांग्रेस से दूरी बना ली।
- आन्दोलन के अचानक स्थगित होने के कारण जो जन-भावनाऐं आसमान की ऊंचाई छू रही थी, वे गहरी निराशा में बदल गयीं।
- लेकिन इसे आन्दोलन की उपलब्धि ही कहा जायेगा कि आन्दोलन के दौरान कांग्रेस व गांधी जी का नाम जन-

जन तक पहुंच गया और कांग्रेस मुठ्ठी भर अंग्रेजी बोलने वाले कुलीनों के हाथ से निकल कर सच्चे अर्थों में जन-आन्दोलन बन गयी।

- वर्ष 1922 से 1925 का काल संक्रमण का काल रहा । इस कालखण्ड में अधिकांश कांग्रेस नेतृत्व जेल में था और राष्ट्रीय आन्दोलन के स्थगित होने और खिलाफत आन्दोलन के अपनी ही मौत मर जाने के बाद कांग्रेस कार्यकर्ताओं के पास रचनात्मक कार्य के अलावा कोई कार्यक्रम ही न रहा।
- दूसरी ओर 1915 के बाद जो क्रांतिकारी जेलों में भर दिये गये थे उनकी सजाऐं पूरी होने के बाद वे वापस कर्म क्षेत्र में आ रहे थे और परिस्थिति को समझने का प्रयास कर रहे थे।
- क्रांतिकारी घटनाऐं पूरी तरह तो कभी नहीं रूकी थीं किन्तु 1923 के मध्य से उनमें तेजी आने लगी।
- 3 अगस्त 1923 को बंगाल के शेखारी टोला डाकखाने पर हमला हुआ जिसमें पोस्ट मास्टर की मृत्यु हुई।
- 9 सितम्बर को बाघा जतीन की बरसी कलकत्ता में सार्वजनिक रूप से मनायी गयी।
- दिसम्बर 1923 में चटगांव में 18 हजार रुपया छीना गया। उसके जाँच अधिकारी को भी मार डाला गया। पुलिस अधिकारी चार्ल्स टेगर्ट के भ्रम में एक अन्य अंग्रेज की हत्या कर दी गयी।
- अप्रैल 1924 में मिस्टर बूसली की हत्या का प्रयास हुआ।
- फरीदपुर में बम कारखाना पकड़ा गया। इन घटनाओं के बीच ही उत्तर प्रदेश से लौटते हुए योगेश चटर्जी 18 अक्तूबर 1924 को हावडा रेलवे स्टेशन पर गिरफ्तार कर लिये गये। उनसे बरामद कागजों से यह स्पष्ट हो गया कि क्रांतिकारी आन्दोलन की तैयारियां जोरों पर हैं।
- सरकार ने जिस रॉलेट एक्ट को वापस लिया था उसे ही नाम बदल कर बंगाल ऑर्डिनेंस के नाम से 25 अक्तूबर 1924 को लागू कर दिया।
- अक्तूबर 1924 में क्रांतिकारियों का एक सम्मेलन कानपुर में आयोजित किया गया जिसमें शचीन्द्रनाथ सान्याल, योगेश चन्द्र चटर्जी, राम प्रसाद बिस्मिल, भगत सिंह, सुखदेव, भगवती चरण वोहरा, शिव वर्मा और चन्द्रशेखर आजाद आदि प्रमुख क्रांतिकारियों ने भाग लिया। इस बैठक में ही 'हिन्दुस्तान रिपब्लिक ऐसोसिएशन'का गठन हुआ।
- बैठक में तीन सूत्रीय कार्यक्रम का निर्णय किया जिसमें अहिंसा की नीति का विरोध, स्वतंत्रता प्राप्ति के लिये सीधे प्रयत्न तथा भारत में संघीय गणराज्य की स्थापना। ऐसोसिएशन की शाखाऐं बंगाल, बिहार, उत्तर प्रदेश, पंजाब, दिल्ली तथा मद्रास में स्थापित की गयी।
- 1925 में 'द रिवॉल्यूशनरी' नाम से एक पत्रक प्रकाशित किया गया जिसकी प्रतियां पूरे भारत में वितरित हुई।
- विदेशों में स्वतंत्रता का अलख जगाने वाले सरदार अजीत सिंह के भतीजे भगत सिंह अपने बाल्यकाल से ही पारिवारिक संस्कारों के कारण देशभक्त थे। जलियांवाला बाग की घटना ने उनके बाल मन पर गहरा प्रभाव डाला था।
- गांधी जी के आह्वान पर उन्होंने 1921 में सरकारी स्कूल छोड़ दिया, लाहौर के नेशनल कॉलेज में प्रवेश लिया। इस समय पंजाब में बब्बर अकाली आन्दोलन और नौजवान भारत सभा पहले से काम कर रहे थे।
- भगत सिंह नौजवान भारत सभा से जुड़े हुए थे। 1924 में वे कानपुर गये जहां उनका सम्पर्क गणेश शंकर विद्यार्थी से हुआ। वे 'प्रताप' के सम्पादक थे। भगत सिंह 'प्रताप' में सह सम्पादक का कार्य करने लगे। यहां उन्होंने अपना नाम बलवन्त रख लिया। कानपुर की बैठक में उनका सम्पर्क काकोरी के क्रांतिकारियों चन्द्रशेखर आजाद और शचीन्द्रनाथ सान्याल आदि से हुआ।

- 1928 के सितम्बर माह में दिल्ली के फिरोजशाह कोटला में क्रातिकारियों की एक गुप्त बैठक हुई। इसमें देश भर से 60 प्रमुख क्रांतिकारियों ने भाग लिया। इसमें अन्य योजनाओं के अतिरिक्त साइमन कमीशन के विरोध का भी निर्णय हुआ।
- 30 अक्तूबर 1928 को लाहौर में साइमन कमीशन का विरोध करते हुए पुलिस की लाठी से लाला लाजपत राय गंभीर रूप से घायल हो गये और 17 नवम्बर को उनकी मृत्यु हो गयी।
- क्रांतिकारियों ने लाला जी की मृत्यु का बदला लेने की प्रतिज्ञा की। ठीक एक माह बाद 17 दिसम्बर को भगत सिंह और शिवराम राजगुरु ने सहायक पुलिस अधीक्षक जॉन सांडर्स की हत्या कर दी।
- राजगुरु के अतिरिक्त सभी लोग साइकल पर घटना स्थल पर पहुंचे थे। चन्द्रशेखर आजाद, जयगोपाल, विजय कुमार और शिव वर्मा दो-दो की टोलियों में उनकी सहायता के लिये घटनास्थल पर मौजूद थे।
- 8 अप्रैल 1929 को केन्द्रीय असेम्बली में पब्लिक सेफ्टी बिल पर चर्चा थी। क्रांतिकारियों ने देश को जगाने के लिये उसी दिन असेम्बली में बम फेंकने का दुस्साहसपूर्ण निर्णय किया। 'हिन्दुस्तान समाजवादी प्रजातांत्रिक सेना' की ओर से जनता के नाम अपील के छपे हुए पर्चे फेंके गए तथा 'इन्कलाब जिन्दाबाद'के नारे लगने लगे। पर्चे में छपा था कि बहरों को सुनाने के लिये यह धमाका किया गया है।
- दोनों लोगों ने वहां से भागने की भी कोशिश नहीं की। 7 मई से 12 जून तक उन पर दिल्ली जेल में मुकदमा चला। अदालत के कठघरे को उन्होंने अपने दल के उद्देश्यों को सार्वजनिक करने के लिये उपयोग किया।
- भूख हड़ताल के कारण 1 अक्तूबर 1929 को यतीन्द्र नाथ दास का बलिदान हो गया। वे 63 दिनों से लगातार भूख हड़ताल कर रहे थे।
- 7 अक्तूबर 1930 को न्यायालय की कार्यवाही पूरी हुई। असेम्बली बम केस में भगत सिंह और बटुकेश्वर दत्त को पहले ही आजीवन निर्वासन का दण्ड मिल चुका था। सांडर्स की हत्या में राजगुरु और सुखदेव के साथ भगत सिंह को मृत्युदण्ड घोषित हुआ।
- 23 मार्च 1931 को तीनों को लाहौर जेल में फाँसी दे दी गयी।
- विशाखापत्तनम में जन्मे अल्लूरी सीताराम राजू ने स्वदेशी के साथ ही ग्रामीणों व जनजाति समाज के बीच मद्यनिषेध और स्थानीय समस्याओं के हल के लिये गाँवों में पंचायतों की स्थापना के लिये काम किया।
- स्वदेशी चिकित्सा पद्धति का भी उन्होंने प्रचार किया। जनजातियों को संगठित होते देख अंग्रेजों ने नवम्बर 1920 में इस क्षेत्र को नगरीय क्षेत्रों से अलग कर एक पृथक एजेंसी बना दिया। अंग्रेजों से पीड़ित लोगों के लिये राजू किसी दैवी व्यक्ति से कम नहीं थे।
- 7 जून 1924 को राजू के सहायक गाम गौतम डोरे की पुलिस की एक टुकड़ी के साथ संघर्ष में मृत्यु हो गयी। उनका दूसरा सहायक गाम मालू डोरे गिरफ्तार कर लिया गया जिसे 19 जून 1924 को फाँसी दे दी गयी।
- वनवासियों का यह संघर्ष पांच वर्ष तक अंग्रेजों का सफल प्रतिरोध करता रहा।
- 23 अप्रैल 1930 को उत्तर पश्चिमी सीमा प्रांत में खान अब्दुल गफ्फार खान को गिरफ्तार कर लिया गया। उन्हें पूरा देश सरहदी गांधी के नाम से पुकारता था।
- 24 अप्रैल 1930 को लोगों ने बड़ी संख्या में एकत्र होकर पेशावर नगर पर अधिकार कर लिया। लगभग 15 दिनों तक यह क्षेत्र पूरी तरह स्थानीय लोगों के नियंत्रण में था। ब्रिटिश शासन का कोई संकेत भी यहां नहीं बचा था।

- 1930 में ही मणिपुर के उत्तर-पश्चिम में यदुनाग अथवा जादोनांग नामक एक युवा समाज सुधारक ने अंग्रेजों द्वारा स्थानीय लोगों के जल-जंगल-जमीन और परम्परा पर हो रहे आक्रमणों के विरुद्ध सांस्कृतिक जागरण का अभियान प्रारंभ किया।
- शीघ्र ही यह अभियान नागालैंड के पेरेन, मणिपुर के तमेंगलांग,सेनापति, चूड़ाचांदपुर, इंफाल घाटी, असम के सिलचर, हाफलोंग और लखीमपुर के कुछ भागों तक फैल गया।
- तेरह वर्ष की अल्पायु में रानी गाइदिन्ल्यू का सम्पर्क यदुनाग से हुआ और वे उनके हेरेका आन्दोलन से जुड़ गयीं।
- 28 जनवरी 1931 को यदुनाग को अंग्रेजों ने गिरफ्तार कर लिया तो अभियान की कमान रानी गाइदिन्ल्यू ने संभाल ली।
- 29 अगस्त 1931 को यदुनाग को फाँसी दे दी गयी। इससे पूरा नगा समाज आक्रोशित हो उठा और रानी ने इस आक्रोश को आन्दोलन में बदल दिया।
- 18 अक्तूबर 1932 को अंग्रेज धोखे से रानी को गिरफ्तार करने में सफल रहे।
- 22 वर्ष की इस रानी को अपनी युवावस्था के 14 स्वर्णिम वर्ष गुवाहाटी, आइजोल, तुरा और शिलांग की जेलों में बिताने पड़े। अपार कष्ट सहते हुए भी उन्होंने अपना और अपने समाज का सिर झुकने न दिया। स्वतंत्रता के बाद ही वे कारागार से मुक्त हो सकीं। वर्ष 1982 में उन्हें 'पद्मभूषण' से सम्मानित किया गया।
- एक ओर क्रांतिकारियों की दूसरी पीढ़ी भी सिमटती जा रही थी दूसरी ओर 1935 का शासन विधान और कांग्रेस के प्रान्तों में सत्ता संभालने से जनता में यह संदेश जा रहा था कि धीमे-धीमे ही सही, भारत स्वशासन की ओर आगे बढ़ रहा है।
- प्रथम विश्वयुद्ध की समाप्ति और उसके बाद हुई वर्साय की संधि में ही अगले महायुद्ध के बीज छिपे थे। 8 प्रान्तों में कांग्रेस के मंत्रिमण्डल काम कर रहे थे जब 1 सितम्बर 1939 को द्वितीय विश्वयुद्ध का प्रारंभ हुआ।
- 7 दिसम्बर 1941 को जापान भी मित्र राष्ट्रों की ओर से युद्ध क्षेत्र में उतर आया और प्रशान्त महासागर पर नियंत्रण कर 8 मार्च 1942 को रंगून पर कब्जा कर लिया।
- अब ब्रिटेन को भारतीय सहयोग की जरूरत थी जिसकी संभावना देखते हुए कांग्रेस कार्य समिति ने 30 दिसम्बर 1941 की बैठक में ब्रिटेन को सहयोग का अग्रिम प्रस्ताव दे दिया था।
- इस पृष्ठभूमि में 23 मार्च 1942 को क्रिप्स मिशन भारत आया और बिना किसी निष्कर्ष के दम तोड़ गया।
- कांग्रेस के भीतर भी हिंसा और अहिंसा के भेद को लेकर चर्चा तीव्र हो चुकी थी। कार्यकर्ता प्रश्न कर रहे थे कि रेल की पटरी उखाड़ना और पुलों को क्षतिग्रस्त करना हिंसा है या अहिंसा ? महात्मा जी के प्रमुख शिष्य मशरूवाला ने हरिजन में छपे अपने लेख में इसे अहिंसा बताया।

आजाद हिन्द फौज: प्रथम महायुद्ध के समय ब्रिटिश सेना के गिरफ्तार सैनिकों को जोड़कर भारत की स्वतंत्रता के लिये प्रारंभिक प्रयास किये गये थे जो अपर्याप्त सिद्ध हुए।

- 1915 के सशस्त्र संघर्ष के प्रयत्नों की विफलता के पश्चात रासबिहारी बोस जापान जाकर बस गये थे।
- बोस ने द्वितीय विश्वयुद्ध को भारत की स्वतंत्रता के लिये अनुकूल अवसर मानते हुए जापानी शासन से समन्वय स्थापित कर लिया। उन्होंने 'इण्डिया इंडिपेन्डेंस लीग' की स्थापना की। 'इण्डिया इंडिपेन्डेंस लीग' का दायरा बढ़ता रहा और 30 हजार से अधिक सैनिक उससे जुड़ गये।
- 15 जून 1942 को बैंकाक में हुई एक कांफ्रेंस में आजाद हिन्द फौज के गठन का औपचारिक निर्णय हुआ।

सम्मेलन में सत्रह प्रस्ताव पारित हुए। सर्वसम्मति से यह पारित हुआ कि भारत एक और अविभाज्य है। कांग्रेस एकमात्र प्रतिनिधिमूलक संस्था है।

- 15 फरवरी 1942 जापान के लिये ऐतिहासिक दिन था जब 90 हजार अंग्रेजी सैनिकों ने उनके सामने हथियार डाल दिये। इनमें लगभग 50 हजार भारतीय सैनिक थे जिनका नेतृत्व सहगल, ढिल्लो, शाहनवाज और चटर्जी आदि कर रहे थे। यही लोग आगे चल कर आजाद हिन्द फौज के प्रमुख रणनीतिकार बने।
- 13 जून 1943 को सुभाष चन्द्र बोस पनडुब्बी से जापान पहुंचे। प्रधानमंत्री तोजो ने भारत के पूर्ण स्वतंत्रता प्राप्त करने के अभियान को समर्थन की घोषणा की।
- तोजो से भेंट के बाद सुभाष बाबू 4 जुलाई 1943 को सिंगापुर पहुंचे जहां उनकी बेसब्री से प्रतीक्षा की जा रही थी। यहां रासबिहारी बोस ने स्वतंत्रता आन्दोलन का पूरा नेतृत्व सुभाष चन्द्र बोस को सौंप दिया।
- हजारों भारतीयों की उपस्थिति में उन्हें 'इण्डिया इंडिपेन्डेंस लीग' का अध्यक्ष और आजाद हिन्द फौज का सर्वोच्च सेनानायक चुना गया। इसी सभा में उन्होंने 'दिल्ली चलो'का नारा दिया और नेताजी का सम्बोधन उन्हें मिला। अस्थायी आजाद हिन्द सरकार की भी घोषणा की गयी।
- 6 जुलाई को आजाद हिन्द सरकार के मंत्रिमण्डल की पहली बैठक में ब्रिटेन और अमेरिका के विरुद्ध युद्ध की घोषणा की गयी। जापान, जर्मनी, इटली, कोरिया, बर्मा, थाइलैंड, चीन, फिलीपीन्स और मन्चूरिया ने आजाद हिन्द सरकार को स्वतंत्र भारत की स्वतंत्र सरकार के रूप में मान्यता दे दी।
- 6 नवम्बर 1943 को जापान द्वारा विजित अण्डमान निकोबार द्वीप समूह को आजाद हिन्द सरकार को सौंप दिया गया जहां स्वतंत्र भारत की प्रथम सरकार का मुख्यालय बना। नेताजी ने इन दोनों द्वीपों का नाम 'शहीद' और 'स्वराज्य' रखा।
- आजाद हिन्द फौज की गौरव गाथा हर भारतीय के लिये प्रेरणा का काम कर रही थी। सेना के भीतर भी इन समाचारों को लेकर चर्चा शुरू हो चुकी थी।
- 19 फरवरी 1946 को नौसेना की टुकडियों ने क्रांति का बिगुल बजा दिया। नौसेना के इन जवानों ने आजाद हिन्द फौज के बिल्ले लगाये और 'जय हिन्द' का उद्घोष किया।
- बम्बई में नाविकों ने रॉयल इण्डियन नेवी के जलपोतों पर अधिकार कर लिया। बम्बई के छात्रों और नागरिकों ने भी उनके समर्थन में हड़ताल कर दी।
- कलकत्ता तक जब इसकी आग पहुंची तो पुलिस के साथ उनका टकराव हुआ जिसमें 284 लोगों की मृत्यु हुई। शीघ्र ही इसका विस्तार करांची, मद्रास, विशाखापत्तनम तथा कोच्चि तक हो गया।
- अनेक नौसेना कार्यालयों और जलपोतों से यूनियन जैक उतार कर तिरंगा फहरा दिया गया। इस क्रांति में बीस हजार से अधिक नौसैनिकों ने भाग लिया। वायुसेना और जलसेना में होने वाली इस क्रांति के पीछे निस्संदेह आजाद हिन्द फौज की प्रेरणा थी।

❖ ❖ ❖

अध्याय 6

स्वाधीनता से स्वतंत्रता की ओर

- द्वितीय विश्वयुद्ध के बाद हारने वाले ही नहीं, जीतने वाले देश भी इस युद्ध में अपनी क्षमता खो चुके थे। ब्रिटेन के लिये भी यह संभव नहीं रह गया था कि भारत जैसे विशाल देश पर अपना नियंत्रण रख सके।
- 8 मार्च 1946 को कांग्रेस कार्यसमिति के अधिवेशन में अंतरिम सरकार को डोमिनियन सरकार मान लेने और सेवाओं तथा प्रशासन का पूर्ण नियंत्रण उसे सौंप देने का आग्रह किया गया।
- पंजाब के दो भाग किये जाने का प्रस्ताव भी इस समिति में पारित किया गया। समिति ने मुस्लिम लीग के प्रतिनिधियों को कांग्रेस के प्रतिनिधियों से मिलने के लिये आमंत्रित किया जिससे नयी स्थिति पर विचार किया जा सके और उसके अनुकूल साधन सोचे जा सकें। मुस्लिम लीग ने इस वक्तव्य में अपने लिये अंग्रेजों की सहायता से पाकिस्तान पाने की संभावना देखी।
- माउंटबैटन को भारत का नया वायसराय नियुक्त किया गया। 24 मार्च 1947 को उन्होंने पद की शपथ ली।
- उन्हें कैबिनेट मिशन की योजना के अनुसार भारत सरकार की स्थापना करने का काम सौंपा गया था। उन्हें कहा गया था कि अंतरिम सरकार के साथ डोमिनियन सरकार जैसा ही व्यवहार किया जाय। सेना का संगठन ज्यों का त्यों बना रहे और हिंद महासागर की रक्षा के मामले में सहयोग चलता रहे।
- भारत आते समय जो माउंटबैटन जून 1948 तक के समय को बहुत कम मान रहे थे, भारत आने के बाद वे इस निष्कर्ष पर पहुंचे कि तत्कालीन परिस्थिति में यह काम नियत समय से जितना पहले हो सके उतना अच्छा होगा। वे इस निष्कर्ष पर भी पहुंच चुके थे कि भारत का विभाजन और पाकिस्तान का निर्माण अनिवार्य है। उनके सामने मुख्य चुनौती कांग्रेस को अपनी शर्तों पर मनाने की थी।
- लम्बे समय तक कांग्रेस का चेहरा रहे महात्मा गाँधी निर्णय प्रक्रिया से अलग-थलग पड़ चुके थे। विभाजन और उससे जुड़ी घटनाओं पर उनकी निराशा भरी टिप्पणी थी – अब मेरी जरूरत न तो जनता को है और न सत्तारूढ़ लोगों को है। प्रार्थना सभा में उन्होंने कहा – मुझे ऐसा जान पड़ता है कि मेरा जीवन कार्य समाप्त हो गया है। मैं आशा करता हूँ कि परमात्मा कृपा करके मुझे और अपमान नहीं सहावेगा। उन्होंने कहा – यद्यपि इस विचार वाला चाहे मैं एक ही व्यक्ति हूँ परंतु मैं दोहराऊंगा कि भारत के विभाजन से भविष्य में देश की ही हानि होगी। जब मुझे यह ख्याल आता है कि विभाजन की योजना में बुराई के सिवाय कुछ नहीं है तो मुझे बड़ा दुख होता है। मुझ से यह भूल हुई थी कि मैंने निर्बल लोगों की अहिंसा को सच्ची अहिंसा समझा था। अब मैं देखता हूँ कि यह अहिंसा नहीं थी, यह तो विरोधाभास था।
- कांग्रेस का नेतृत्व अब नेहरू और पटेल के हाथों में था। दोनों ने ही विभाजन और पाकिस्तान के निर्माण को स्वीकार कर लिया, हालांकि दोनों ने इसके लिये अपने-अपने तर्क दिये।
- 4 जुलाई से 16 जुलाई 1947 के बीच 12 दिन की चर्चा में ही ब्रिटिश संसद ने भारतीय स्वतंत्रता विधेयक पारित कर दिया।

- 18 जुलाई को उस पर शाही अनुमति भी प्राप्त हो गयी।
- भारत का विभाजन तात्कालिक परिस्थितियों से उपजी मांग अथवा अनिवार्यता नहीं बल्कि अंग्रेजों की नीति का हिस्सा थी। 1935 के कानून में मुस्लिमों के लिये किये गये विशेष प्रावधानों ने संकेत दे दिये थे कि वे साम्प्रदायिक आधार पर बंटवारे को मजबूत कर रहे हैं।
- अंग्रेजों को अपनी रणनीति को लागू करने के लिये किसी भारतीय की जरूरत थी और जिन्ना ने वह कमी पूरी कर दी। 1943-44 में चक्रवर्ती राजगोपालाचारी द्वारा हिन्दू-मुस्लिम एकता के लिये किये गये सारे प्रयत्न निष्फल सिद्ध हुए।
- 15 अगस्त को भारत स्वाधीन हुआ। चार शताब्दियों से अधिक की फिरंगियों की गुलामी और उसके विरुद्ध लड़े गये निरंतर संग्राम में से यह स्वाधीनता प्रकट हुई थी। लेकिन यह अपने साथ मुट्ठी भर खुशियां लायी तो झोली भर पीड़ा।
- हजारों वर्षों में हमने भारत के जिस भू-भाग को कभी अपने से अलग नहीं माना, वह पल भर में पराया हो गया। 14 अगस्त की भोर के साथ ही पाकिस्तान का उदय हुआ और भारत का एक भाग कट कर अलग हो गया। मजहब के नाम पर एक भावोद्रेक उमड़ा और सदियों की एकता को बहा ले गया। लाखों लोग मारे गये और नरसंहार का जो भीषण दौर चला वह अभूतपूर्व था।
- केवल 90 वर्ष पहले 1857 के स्वातंत्र्य समर में कंधे से कंधा मिला कर लड़ने वाले मुस्लिम समाज को पाकिस्तान के जनक मुहम्मद अली जिन्ना यह समझाने में सफल रहे कि मुस्लिम अलग राष्ट्र हैं और हिन्दुओं के साथ मिल कर रह पाना उनके लिये असंभव है।
- 15 अगस्त 1947 तक भी यह आधिकारिक रूप से घोषित नहीं हुआ था कि पंजाब का कौन सा हिस्सा भारत में रहेगा और कौन सा पाकिस्तान में। भारत की सीमाओं के निर्धारण के लिये गठित रेडक्लिफ आयोग ने अपनी रिपोर्ट 17 अगस्त को प्रस्तुत की।
- स्वाधीनता के 75 वर्षों की यह यात्रा वस्तुतः स्वाधीनता से स्वतंत्रता की यात्रा है। जब तंत्र के सभी हिस्से परस्पर समन्वय के साथ भारतीय मूल्यों को अपनाकर, भारत के स्व के अनुकूल स्वयं को ढ़ाल कर राष्ट्रीय आकांक्षाओं को पाने की दिशा में सबको साथ ले सहजता से आगे बढ़ेंगे तभी हम सच्चे अर्थों स्वयं को स्वतंत्र कह सकेंगे।

❖ ❖ ❖

सेंटर फॉर एडवांसड रिसर्च ऑन डेवलपमेंट एंड चेंज (CARDC) की स्थापना 9 जून 2011 को हुई। इसकी परिकल्पना शिक्षाविदों एवं समाज के विभिन्न वर्गों के सदस्यों के लिए एक ऐसे मंच के रूप में की गई थी जहाँ सामूहिक रूप से लोग सामाजिक विज्ञान एवं मानविकी से जुड़ी ज्वलंत समस्याओं को लेकर विचार -विमर्श कर सकें और उन्हें दूर करने के लिये कृतसंकल्पित हो सकें। इस गैर लाभकारी संस्था का उद्देश्य भारतीय लोकतंत्र के सैद्धांतिक सह अनुभवजन्य पहलुओं के साथ-साथ भारतीय समाज के विभिन्न क्षेत्रों पर ध्यान केंद्रित करते हुए अन्तर्विषयक अनुसंधान करना है। (CARDC), विकास और परिवर्तन के अध्ययन में कई शोध एवं प्रज्ञात्मक कार्यक्रम करता आया है। 'स्वाधीनता से स्वतंत्रता की ओर' हमारी यात्रा का अध्ययन आज हम सभी के लिए सर्वोपरि है।

'आज़ादी का अमृत महोत्सव' के तत्वाधान में संस्कृति मंत्रालय भारत सरकार के सौजन्य से 'सेंटर फॉर एडवांस्ड रिसर्च ऑन डेवलपमेंट एंड चेंज' राष्ट्र जागरण का पर्व 'क्रांतितीर्थ' मना रहा है। यह एक शृंखला मात्र नहीं बल्कि एक अभियान है उन बलिदानियों को श्रद्धांजलि देने का जिन्होंने अनेक कष्ट सहे, अपना जीवन, अपना सर्वस्व देश की स्वतंत्रता के लिए, स्वराज की, स्वधर्म की भावना के लिए समर्पित कर दिया, फिर भी वे इतिहास के पृष्ठों में अनाम रह गए, अल्पज्ञात रह गए। क्रांतितीर्थ इस क्रांतिधरा के उन सभी अनाम अज्ञात बलिदानियों को कृतज्ञ भारतवासियों की ओर से वंदन की श्रंखला है। अलगाव, अविश्वास, विषमता एवं विद्वेष को हटा के राष्ट्र की एकात्मता, अखंडता, सुरक्षा, सुव्यवस्था, समृद्धि तथा शांति की ओर अग्रसर होना सही मायने में बलिदानियों को श्रद्धांजलि होगी। क्रांतितीर्थ की इस भावना को प्रसारित करने का यह एक प्रयास है।

संकलन एवं प्रकाशन

संस्कृति मंत्रालय
भारत सरकार

आज़ादी का अमृत महोत्सव

G20 भारत 2023 INDIA

Centre for Advanced Research on Development and Change
192, Vidya Vihar. West Enclave Pitampura. New Delhi 110034
e-mail: mailcardc@gmail.com, Website: www.cardc.co.in